प्रेम पत्र

मेरे प्यारे कृष्ण कन्हैया

जनता की गोपियां आपसे होली खेलने के लिये बहुत मतवाली हैं। वे सब नए-नए कपड़े पहन कर इण्डिया गेट के मैदान पर खड़ी हैं। देखिये आपसे होली खेलने के लिये इन्होंने आपस में कितने झगड़े किये। सबको यही देखना है कि आप किस रंग में होली खेलेंगे, क्या यह जनसंघ का पीला, कम्युनिस्टों का लाल या भारतीय लोक दल का हरा-बसन्ती रंग होगा? आपकी नजर किस पर पड़ेगी, किसको आपकी बांसुरी की धुन सुनाई देगी।

एक बार आपने अपनी क्रान्तिकारी बांसुरी की मनमोहक धुन सुनाई थी, सब लोग बहुत मुग्ध हो गये थे। लेकिन फिर इतना शोर हुआ कि बांसुरी सुनाई देनी बन्द हो गई। सब जनता की गोपियां अपना-अपना नगाड़ा बजाने लगीं और अब होली के मौसम में तो घुंघरु, ढोल, बाजे सब अपने-अपने लाई हैं, खूब नाच और तमाशा हो रहा है। अभी तो सब नाच में लगे हैं। लोगों का मन लगा हुआ है। मगर जब थक जायेंगी तब क्या होगा?

देखिये इतनी देर न लगाइये, जल्दी से धरती पर आइये। अगर आपने बहुत देर करी तो आपको दिखाने के लिये जो गंगा में स्नान करके अपना रंग सफेद किया है कहीं लालच की आग में तप कर, वह काला न पड़ जाय।

आपका

चिलली

मुख पृष्ठ पर

फूल फूल पर रंग गिरे हैं
रह जाये कोई रंग न
मैं आज काम में मग्न हूँ
अब करे कोई तंग न ।
लाल पीला हरा गुलाबी
सभी रंगो के फूल खिले
तुम भी भैया रंग दो सबको
जहां कोई बेरंग मिले ॥

दीवाना
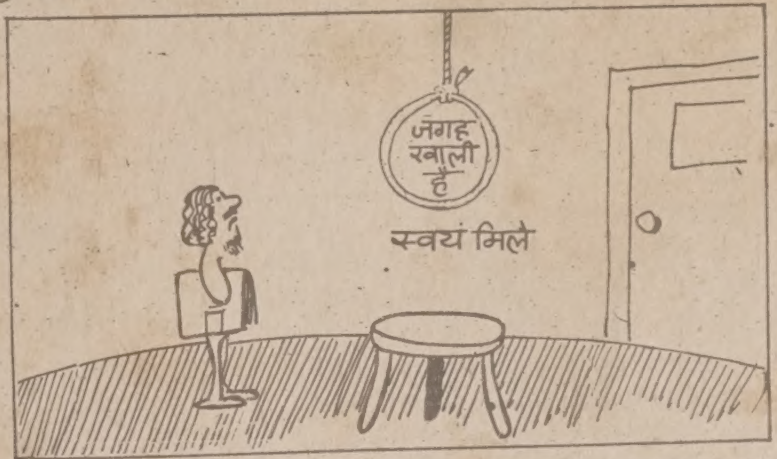
अंक : ८, १५ मार्च से २१ मार्च ७६ तक
वर्ष : १५

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दें
छमाहीः २५ रु०
वार्षिकः ४८ रु०
द्विवार्षिकः ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिए पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०

'पेप' बारूदखाना—गोलागंज, लखनऊ

प्र० : शायर लोग, कठोर दिल की उपमा पत्थर से और नरम दिल की शीशे से देते हैं, लेकिन आप ?

उ० : सख्त हृदय को सुपाड़ी की उपमा से नाप,
होय मुलायम दिल उसे हलवा समझें आप।

केवल प्रकाश, काशीपुर

प्र० : मंगल ग्रह के बारे में कुछ बताइए, काका ?

उ० : मंगल को काकी करे, हनूमान का जाप,
चाट खायं बाजार में, काका कवि चुपचाप।

रमेश कुमार थापर, कोलीवाड़ा—बम्बई

प्र० : कुशल से हूं काका, कुशल चाहता हूं,
लगन लागी दिल में, मिलन चाहता हूं।

उ० : अगर खाली हाथों चले आइएगा,
तो काकी के दर्शन नहीं पाइएगा।

सुभाष चन्द्र मित्तल, बाघा पुराना

प्र० : इन्सान की सबसे बड़ी बेवकूफी क्या है काका ?

उ० : जनता पार्टी में लगी, फूटनीति की हाट,
बैठे हैं जिस पेड़ पर, रहे उसी को काट।

राजाराम 'पुष्प', नोवा मुंडी, सिंहभूम, बिहार

प्र० : काका के करतूस, युद्ध सीमा पर चलाए जाएं तो।

उ० : कारतूस यह हास्य के, जब सीमा पर जायं।
हँसते हँसते शत्रु के, सब सैनिक मर जायं॥

रमेश चंद्र वर्मा, कोट, अमरोहा

प्र० : रुठी हुई राजनीतिक प्रेमिका कैसे मनाई जाए ?

उ० : रूठ जाय यदि प्रेमिका, फेर लेय वह पीठ।
आ जाएगी लौटकर, दे दो ऊँची सीट॥

आनंद किशोर सिंह, नवाब गंज, हजारी बाग

प्र० : मर्द की प्रत्येक गलती को औरत माफ कर देती है, लेकिन मर्द माफ क्यों नहीं करता ?

उ० : उलट दीजिए प्रश्न को, उत्तर खुद मिल जाय।
मर्द माफ कर देय पर, औरत नहीं कर पाय॥

शाहिद गेहलोत, अंधेरी, बंबई

प्र० : काका जी हमें आपका पता चाहिए कैसे मिले ?

उ० : 'दीवाना' के बक्स में, डाल देउ लैटरं।
पहुंच जाएगा हाथरस, काका कवि के घरं॥

राजेश कोहली, मॉडल टाउन, दिल्ली-६

प्र० : लड़के को कितनी उम्र में किसी लड़की से प्यार करना चाहिए ?

उ० : प्यार-प्रीति को उम्र का, बन्धन है बेकार,
बाल-जवानी-बुढ़ापा, जब चाहे कर प्यार।

केवल प्रकाश 'दुआ', काशीपुर (उ० प्र०)

प्र० : अच्छी सेहत बनाने के लिए, क्या करना चाहिए ?

उ० : खान-पान सीमित रहे, चिंता तज अलमस्त,
हास्य व्यंग्य सेवन करो, रहो सर्वदा स्वस्थ।

आनन्द कुमार माहेश्वरी, कानपुर

प्र० : हाथरस का ही एक हास्य कवि आपके खिलाफ प्रचार क्यों कर रहा है ?

उ० : डाक्टर साहब कह रहे, करके उसको चैक,
ईर्ष्या के कारण हुआ, इसका माइन्ड क्रैक।

राकेश कुमार तिवारी, कानपुर

प्र० : मैं बड़ा होकर मंत्री-नेता बनूं या आप जैसा काका ?

उ० : मंत्री-नेता की उमर सिर्फ पांच ही वर्ष,
'काका' बनकर प्राप्त हो, बूढ़े पन तक हर्ष।

सतीश भाटिया, मेरठ कैन्ट

प्र० : प्रेमिका हाथ छोड़ जाए, जिन्दगी साथ छोड़ जाए तो ?

उ० : हाथ-साथ जब छुट गए, मारो सबको लात,
हाथ पकड़कर खींच लें तुम को दीनानाथ।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००

ोटल वाला पतली दाल देता है। आप छः-सात दिन
किसी बर्तन में इकट्ठा करते रहें और होली वाले
ह सारा पानी होटल वाले पर रंग की तरह
डाल दें।

नजर आये तो पिचकारी से रंग उसके कान में
लये जैसे डाक्टर कानों की सफाई के लिए
। पोस्टमैन गुस्सा होकर पूछे कि ऐसे रंग डाला
तो आप जवाब दें कि तुम भी तो इसी तरह
गलत एडरेस पर डालते हो। मैं रंग गलत
एडरेस पर मार रहा हूँ।

ुल होने के कारण आपको मोमबत्तियां जलानी
ंगी। इन मोमबत्तियों के बचे टुकड़ों को पानी
लये ! उस पानी में तबे की कालिख मिलाइये
घोल को अपने इलाके के बिजली विभाग के
कर्मचारी के ऊपर डालिये।

अगर आपका पड़ोसी मैगजीन मांग कर फोटो का पेज
फाड़कर लौटाता है तो आप ऐसी बेकार हुई सारी
मैगजीनें पानी में भिगोइये और प्रेशरकुकर में डालकर
पकाकर लुगदी बना लें। इस लुगदी में हल्का-सा खाने
का रंग मिलाकर पड़ोसी के सिर पर डालें जैसे केक व
पेस्ट्री पर क्रीम की ड्रेसिंग की जाती है।

साल भर के धोबी द्वारा तोड़े बटनों के टुकड़े जमा
कीजिये ! इन्हें ग्राइंडर में महीन पीसिये। अब उसके
बराबर अनुपात में राख और सोड़ा मिलाइये। इस
मिक्सचर को अपने धोबी के मुंह पर गुलाल की तरह
मलिये।

दीवाना होली हास्य संगम

होली के रोज एक अज्ञात स्थान पर दीवाना हास्य संगम सम्मेलन करने की योजना बना रहा है। योजना के अनुसार देश के कुछ विशिष्ट व्यक्तियों को पुरस्कार दिये जायेंगे।

कुछ पुरस्कारों की सूची इस प्रकार है।

जार्ज फर्नान्डिस को

जार्ज फर्नान्डिस को बड़े उद्योग पतियों को राष्ट्रीयकरण की धमकी देने के लिये गीदड़ भभकी ट्राफी प्रदान की जायेगी।

इन्दिरा गांधी को

श्रीमती इन्दिरा गांधी को तिहाड़ जेल के खटमलों का वीरता पूर्वक सामना करने लिये वीरता शील्ड दिया जायेगा।

कपिलदेव को

कपिल देव को सीमा से अधिक बम्पर फेंकने के लिये एक पुरानी कार का बम्पर ट्राफी रूप में भेंट किया जायेगा।
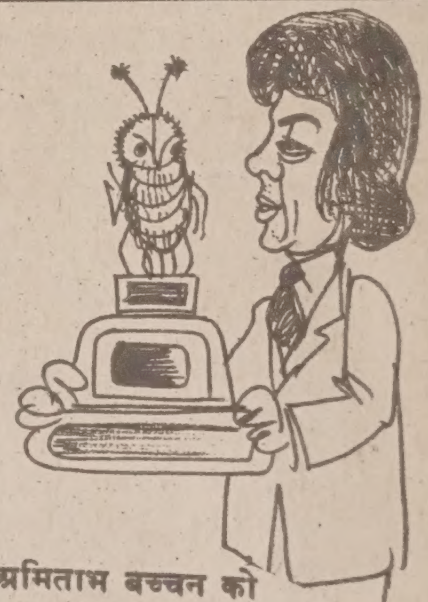
अमिताभ बच्चन को

अमिताभ बच्चन को फिल्मी दुनिया में पीलिया का रोग फैलाने के लिए वाइरस गोल्ड कप दिया जायेगा।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

ब्रह्मपाल सिंह विद्यार्थी—मुरादाबाद : क्या आदमी गलती करके ही अक्लमन्द बनता है ?

उ० : हमने शादी की, इससे तो यही सिद्ध होता है।

विमेश आर्य—रिवाड़ी : चाचा जी, आज भाई भतीजावाद बहुत चल रहा है। आप अपने भतीजों के लिए कुछ नहीं करते। इसका क्या कारण है ?

उ० : इसका उत्तर जानने के लिए जनता पार्टी की अन्दरूनी हालत देखिये, जहां जितना भाई भतीजावाद चल रहा है, उससे अधिक जूता चल रहा है।

दीपक कुमार रामटोला—बीरगंज : संसार में सबसे बड़ा मां का प्यार होता है, फिर मनुष्य किसी और के प्यार में क्यों खो जाता है ?

उ० : किस की बात कर रहे हैं आप ? आज का मनुष्य तो मां को बेच देता है। आपको पता नहीं कि धरती मां होती है और सरकार छोटी बड़ी कालोनियां बनाने के लिए धरती बेच रही है।

चन्द्रभान 'अनाड़ी'—जबलपुर : आई दी बे, आपकी मुलाकात खुदा से हो जाये तो आप उससे पहला सवाल क्या करेंगे ?

उ० : जैसे मोरारजी की सरकार में चौधरी चरण सिंह की पिल गई है, ऐसे ही हम खुदा से कहेंगे, 'हमारे पास लाखों दीवानों की 'स्ट्रेंग्थ' है। आजमानी हो तो बीस लाख दीवानों की रैली निकलवा दें। अब बताओ, तुम हमें 'डिप्टी खुदा' बना रहे हो या नहीं ?

मनोहर होतवानी—इन्दौर : चाचा जी, कहते हैं, मर्द औरत से बलवान होता है, जबकि इतिहास साक्षी है कि मर्द ने हमेशा औरत के कारण मात खाई है। आपका इस विषय में क्या विचार है ?

उ० : अगर आप इतिहास को ध्यानपूर्वक देखें तो पता चलेगा कि असल बात बलवान या बलहीन होने की नहीं, बल्कि गलती करने या गलती न करने की है। जैसे एक बार हमसे एक भले आदमी ने पूछा, 'जो आदमी गलती करके मान ले तो आप उसे क्या कहेंगे ?' हमने उत्तर दिया, 'अक्लमन्द, शरीफ और भला आदमी।' उसने फिर पूछा, 'और जो गलती न करने पर भी उसे मान ले ?' हमने उत्तर दिया, 'विवाहित पुरुष।'

पवन कुमार—अलवर : आप मेरे प्रश्नों के उत्तर नहीं देते। क्या आप जानते नहीं कि मेरा गुस्सा कैसा है ?

उ० : ऐसे ही एक बार दो दोस्तों में एक दोस्त अपने खानदान की बड़ाई बता रहा था। हमारा घराना ऐसा है, हमारा घराना वैसा है। फिर उसने बड़े रौब से गर्दन अकड़ा कर कहा, 'जानते नहीं मेरा बाप कौन था ?' दूसरे मित्र ने जवाब दिया, 'पता नहीं, अपने घरवालों से जाकर पूछो। वे जो बतायें वह मुझे भी बता देना'। तो पवन कुमार जी, दीवार में सर मारिये, फिर हमें भी बता दीजिये कि आपका गुस्सा कैसा है।

कु० तस्नीन—आजमगढ़ : चाचा जी, मुझे दीवाना पत्रिका बहुत पसन्द है। मैं इसके लिए एक कहानी भेजना चाहती हूं, लेकिन परेशानी यह है कि मेरी कहानी डेढ़ दो पृष्ठों की है। क्या इतनी लम्बी कहानी आप दीवाना में प्रकाशित करना स्वीकार करेंगे ?

उ० : दीवाना के कम पृष्ठों में अधिक से अधिक सामग्री समा सके। इसलिए हम छोटी रचनाओं को ही अधिक महत्व देते हैं। रचना बहुत रोचक और मनोरंजक हो तो उसे तीन चार भागों में प्रकाशित करने पर विचार किया जा सकता है।

इकरामुद्दीन कोहरी—बीकानेर : दुनिया में ऐसी कौन-सी चीज है जो बाजार में नहीं मिलती ?

उ० : यह पूछने की बजाय, जरा आप ही हमें बता दीजिए 'जनता पार्टी' राज्य में ऐसी कौन-सी चीज है जो उचित ढंग से बाजार में मिलती है ?

चन्द्रशेखर गोस्वामी—हरिद्वार : चाचा जी, मौत किसे नहीं डरा सकती ?

उ० : सच्चे और ईमानदार आदमी को। सैंकड़ों साल पहले यूनान में जब 'सुकरात' को जहर का प्याला दिया जाने लगा, तो उसके समर्थक बुरी तरह रोने लगे। सुकरात ने पूछा, 'तुम लोग क्यों रोते हो ?' उसके प्रशंसकों ने उत्तर दिया, 'इसलिए कि आप बेगुनाह मारे जा रहे हैं।' इस पर सुकरात बोले, 'पागलों, तो क्या तुम यह चाहते हो कि मैं गुनाह करता और मारा जाता ?' उस समय उसके सामने मौत का कोई डर नहीं था।

योगेश कुमार अग्रवाल—डीमापुर, नागालैंड : आप एक बोतल मिट्टी के तेल के बदले हमें क्या दे सकते हैं ?

उ० : एक बोतल अपना तेल। पिछले दिनों मिट्टी का तेल लेने के लिए लाइन में लगे रहने पर हमारा तेल निकल गया था। वह हमने एक बोतल में भर रखा है। पर एक बात का ख्याल रखिये। हमारा तेल आपने अपने सर में लगाया, तो नागालैंड के बच्चे तालियां बजा बजाकर लोगों से कहेंगे :

छछून्दर के सर में चम्बेली का तेल
देखो रे लोगो, ये कुदरत का खेल

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

होली दीवाना कोड संदेश

होली पर विभिन्न व्यक्ति एक दूसरे पर रंग फेंककर संदेश दे सकते हैं। कोड संदेश कैसा हो सकता है उसका संक्षिप्त परिचय इस फीचर में पढ़िए।

प्रेमिका का बाप और प्रेमी

प्रेमी नीला रंग फेंकता है।
प्रेमिका का बाप प्रेमी के मुंह पर काला रंग मारता है।
मतलब—

प्रेमी—
मुझे आपकी
लड़की
नीला चाहिये।

प्रेमिका
का बाप—
मुँह काला
करो यहां से।

इनकम टैक्स अफसर व व्यापारी

टैक्स अफसर व्यापारी पर काला रंग फेंकता है।
व्यापारी अफसर पर हरा रंग फेंकता है

मतलब—अफसर—तुम्हारे पास बहुत ब्लैक मनी है!
व्यापारी—शSSSS। हरा पत्ता लेकर मामला दफा करो

प्रेमी प्रेमिका

प्रेमी प्रेमिका के हाथों पर पीला रंग फेंकता है।
प्रेमिका प्रेमी के मुंह पर सफेद रंग मारती है।
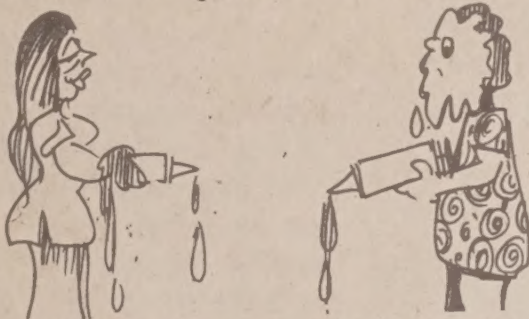
मतलब—प्रेमी—मैं तुम्हारे हाथ पीले करना चाहता हूं।
प्रेमिका—क्या तुम खाक करोगे? मेरे बाप से मिलते हुये डर के मारे तुम्हारा चेहरा सफेद पड़ जाता है।

कवि और उसकी पत्नी

कवि की पत्नी कवि पर आसमानी रंग फेंकती है
कवि अपनी पत्नी पर मटियाला रंग फेंकता है
मतलब—

पत्नी—कुछ दुनियादारी की बात करो तुम हमेशा आसमान में उड़ते रहते हो
कवि—
मैं स्वछंद कवि हूं। मुझे मिट्टी में मत घसीटो

डाक्टर और मरीज

मरीज डाक्टर पर लाल रंग फेंकता है।
डाक्टर मरीज के पेट पर कत्थई रंग डालता है।
मतलब—
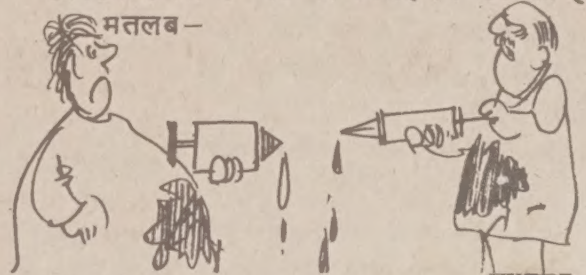
मरीज
आपने जो
लाल रंग की दवा
दी थी उससे कुछ
फायदा नहीं हुआ।

डाक्टर—
मैं क्या करूँ?
तुम्हारे पेट
में पित्त जमा
हुआ है।

आपके पत्र व भंग का कमाल

होली का महीना जान किसी ने हमारे सम्पादक मंडल के एक सदस्य को भंग के पकौड़े खिला दिये। उन्हें कैंन्टीन से आकर पाठकों के पत्रों के उत्तर देने थे। भंग के नशे में उन्होंने क्या क्या उत्तर लिखे आप भी पढ़िये—

प्र० : दीवाना हमारे यहां बहुत लेट आता है आप दीवाना समय पर छापा कीजिये।

उ० : आपका सुझाव हम मानने में असमर्थ हैं अत: दीवाना समय पर छापने की बजाय हम कागज पर ही छापते रहेंगे।

प्र० : आप घटिया कागज पर दीवाना छापते हैं। कृपया भविष्य में अच्छे कागज पर छापा कीजिये।

उ० : आपने जिस कागज पर पत्र लिखा है वह दीवाने के कागज से भी घटिया है। भविष्य में आप अच्छे कागज पर पत्र लिखा कीजिये।

प्र० : मैं दीवाना का वार्षिक ग्राहक बनना चाहता हूं क्या करूं ?

उ० : दीवाना का वार्षिक ग्राहक बनने के लिये पहले आपको आई० टी० आई० से डिप्लोमा कोर्स करना पड़ेगा। फिर किसी विषय पर शोध करके दिल्ली यूनिवर्सिटी से डाक्टरेट प्राप्त करनो होगी व यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन से आई० ए० एस० की परीक्षा पास करने के बाद आपका मैडिकल टैस्ट लिया जायेगा और अंत में आपको दीवाना के दफ्तर में इन्टरव्यू देना होगा ! इसके पश्चात देहाती पुस्तक भंडार से भारत का असली प्राचीन जादू मंगवा कर उसमें लिखी विधि से चालीस दिन आधी रात को शमशान घाट जाकर पिशाचनी की सिद्धी करनी होगी ! आपका तप सफल हो गया तो पिशाचिनी दर्शन देगी और आप उससे दीवाना का वार्षिक ग्राहक बनने की पूरी विधि मालूम कर सकते हैं।

प्र० : कहते हैं कि दूसरों को हंसाने वाले कलाकार स्वयं रोते रहते हैं क्या आपके साथ भी ऐसा ही है ?

उ० : क्या आप हमें भी राजनारायण समझ रहे हैं ?

प्र० : मैं दीवाना में अपनी कविता छपवाना चाहता हूं।

उ० : सिर्फ चाहने से क्या होता है ? चाहने को तो हम भी टीना मुनीम से शादी करना चाहते हैं। वैसे एक तरकीब है। आप दीवाना पत्रिका का स्वामित्व खरीद लीजिये। दस लाख रुपये का खर्चा है। फिर सम्पादक की कुर्सी पर अपना कोई चमचा बिठा लीजिये और कविता छपवाइये।

प्र० : दीवाना पढ़ते ही मेरी उदासी चली जाती है।

उ० : आप चिन्ता न करें आपकी उदासी अकेली थोड़े ही जाती है। उसके साथ आपका रुपया भी जाता है।

प्र० : मैंने ट्रेन में समय काटने के लिये दीवाना खरीदा। डिब्बे में एक लड़की ने पढ़ने के लिये दीवाना मुझसे मांगा। हमारा परिचय हो गया। बाद में हमने शादी कर ली और जीवन साथी बन गये। आपका मैं बहुत आभारी हूं।

उ० : आपकी पत्नी का भूतपूर्व प्रेमी हमारा आपसे भी ज्यादा आभारी है कि हमने प्रेमिका से उसका पीछा छुड़वा एक बड़ी मुसीबत से बचा लिया। वह हमारा आजीवन ग्राहक बन गया है।

प्र० : आप दीवाना में पाठकों के कार्टून छापा करें ?

उ० : छापते रहे हैं पाठकों के फोटो दीवाना फ्रेंडस क्लब में।

प्र० : पड़ौसी दीवाना मांग कर ले जाता है और लौटाता नहीं है, इस समस्या का क्या समाधान है ?

उ० : आप उसके घरजमाई बन जाइये।

नेकी

—मिश्री लाल जायसवाल

मैंने
एक सज्जन की जान
डूबने से बचाई,
मगर उनकी पत्नी ने
धन्यवाद की जगह
मुझ को डांट पिलाई—
तुम अजीब आदमी लगते हो,
सस्ती वाहवाही के लिए
दूसरे के मामले में
कूद पड़ते हो।
इन्हें बचाने के लिए
किसने तुम्हें बुलाया था,
हमने तो इसी दिन के लिए
इनका बीमा कराया था।

उल्टी दुनिया

मढ़ाताल में घाट नहीं है,
हीरामल को खाट नहीं है।
मोटा बेहद हिलता पाया,
ऊंचा पेड़ कहीं ना छाया।
हाथी है गिलास में चस्पा,
साधू को लिबास का चस्का।
नाम नयन-सुख, आंख के अंधे,
मोती मल्ल के, काले धंधे।
गांठ के पूरे, अकल अधूरे,
कौड़ीमल के, ठाठ घनेरे।
मन का चंगा, कनक न कंडा,
झगड़ा करते, ज्ञानी-पण्डा।
मम्मी बाहर, अन्दर फादर,
ठंड बचायें ? चिथड़ा-चादर।
रोज-रोज हो, सीधा उल्टा,
पतिव्रता को, डांटे कुलटा !
जहां देखिए, उलटी दुनिया,
दादी पैदल, कार में कुतिया।

परोपकारी

अरे माली कण्डे राम यह क्या, तुम्हें तो बड़ी खांसी हो गई है ?
खौं
खौं खौं

हां साहब, महीने भर से यह खांसी पीछे पड़ी है ।
तो क्या महीने भर से इसका इलाज नहीं करवाया तुमने ?

हां जी करवाया तो था अपने हकीम राज से, पर कोई फायदा नहीं हुआ।
अरे हकीम वकीम को छोड़ो और किसी अच्छे डाक्टर को दिखाओ। मेरे दोस्त डाक्टर जिनकी मोड़ पर दुकान है उनके पास ही चले जाओ ।

—और मेरा नाम ले दोगे तो वह तुमसे पैसे भी नहीं लेगा ।
बड़ी मेहरबानी, परोपकारी साहब जी आपकी !

कुछ दिन बाद !
क्यों कण्डे, तुम्हारी खांसी ठीक नहीं हुई। तुमने डाक्टर को दिखाया था कि नहीं ।
नहीं साहब, मैं उनका नाम देखकर डर गया...

वहां लिखा था मारकण्डे मैंने सोचा मुझे मारने ही न लगे ।

सुरेश आजकल मुझे नींद नहीं आती। नींद की गोलियां भी असर नहीं करती।

अरे तुम सुनील की लिखी कविताएं और ग़ज़लें सुनो, तुम्हें जरूर नींद आ जायेगी ।

नहीं- नहीं, मुझे उसकी कविताएं और ग़ज़लें नहीं सुननी। मैं सिर्फ एक रात सोना चाहता हूँ, हमेशा के लिए नहीं !
जसवंत

धारावाहिक उपन्यास (भाग-१२)

सुबह का तारा

लेखक—संगीता

जहां सुशील उसे पढ़ाया करता था। मेज पर मेज-पोश बिछाया और केतली टी-कोजी से ढककर इस तरह बैठ गई जैसे किसी मेहमान का इन्तजार कर रही हो।

कुछ मिनट ही बीते थे, रंजन आ गया। वह कुछ झेंपा-झेंपा-सा दिखाई दे रहा था।

मधु जल्दी से उठकर खड़ी हो गई।

'क्या यह सब—?'

रंजन आश्चर्य चकित सा बैठ गया।

कुछ देर खामोशी रही। फिर रंजन ने कहा—

'तुम भी तो खाओ।'

मधु ने एक टोस्ट उठाया। अपनी बोझिल पलकें उठाकर रंजन की ओर देखा और मुस्करा दी। फिर धीरे-धीरे खाने लगी।

चाय पीने के बाद मधु ने धीरे से कहा—

'ये दोनों पत्र रख लीजिये। आपने जो पत्र मुझे लिखा है, उसका उत्तर कल दूंगी। आज रात सोचने का मौका दीजिए।'

रंजन कुछ कह न पाया चुपचाप उठा और चला गया।

दूसरे दिन सवेरे ही मधु सीमा के पास पहुंच गई। वहीं उसकी भेंट नादिर खां की पत्नी और सरदार सिंह से हुई और वह वहां से नरेन्द्र सिन्हा की पत्नी शीला के पास चली गई।

शाम होने से कुछ देर पहले वह घर पहुँची। और शाम को जब रंजन आया तो उसे लगा जैसे मधु की निगाहें उसे धिक्कार रही हैं। वह आश्चर्यचकित रह गया।

मधु सुर्ख कपड़े पहने हुए थी। फूलों से उसका बदन सजा हुआ था। रंजन को देखते ही वह बोली—

'आइये, मैं आपकी इन्तजार कर रही थी।'

रंजन के चेहरे पर हल्की सी खुशी की लहरें उभरीं और पथराया हुआ सा उसका चेहरा तमतमा उठा। मधु उसे देखकर कमरे में ले आई और बोली—

'रंजन भाई, मुझे जो बात कल तक न मालूम थी वह आज मालूम हुई है। मैं सीमा से मिल चुकी हूँ और नादिर खां की पत्नी से भी। सरदार सिंह से भी और नरेन्द्र सिन्हा की पत्नी शीला से भी। मुझे यह भी मालूम हो गया है कि जब फायर की आवाज सुनी थी, उस समय सुशील बाबू आकर यहां खड़े थे मेरे पास। मैंने दूसरी बार फायर की आवाज नहीं सुनी। क्यों नहीं सुनी?' मधु एक पल के लिए खामोश हो गई। उसने कनखियों से रंजन की ओर देखा। वह सिर झुकाए बैठा था। मधु ने कहा, 'दोस्त के लिए जान दे देना बहुत बड़ी बात नहीं है। लेकिन दोस्त के लिए हत्यारा और खूनी बन जाना बहुत बड़ी बात है। शायद मैं सुशील बाबू की इच्छा के सम्मान में सिर झुका देती। लेकिन यह जान लेने के बाद अब मेरे लिए किसी की पत्नी बनकर जिन्दगी जीनी बहुत कठिन है। उन की विधवा बनकर जीना बहुत आसान है। रंजन भाई, आप मेरे लिए जो थे, वही रहेंगे। इतना जरूर है कि पहले आपके अहसान के बोझ तले अपने आपको दबा हुआ महसूस करती थी अब यह जान गई हूं कि आप अपने अहसानों की कितनी भारी कीमत वसूल कर रहे हैं।'

और मेरा नाम रंजन है।

जिन्दगी की बाजी पलट गई है।—शतरंज के खेल की तरह—एक चाल गलत हुई और सारा खेल बिगड़ता चला गया। हर मोहरा पिटता गया—बादशाह को कितना ही बचाओ, शह पड़ ही जाती है और मात के अलावा कोई चारा नहीं रह जाता।

यही हाल मेरा है।

इसी समय—और बस थोड़ी देर में ही मुझे फैसला कर डालना है।

आरम्भ से आज तक परिस्थितियां मेरे अनुकूल रहीं। लेकिन आज बदल गई हैं।

सुशील को फांसी की सजा हो चुकी थी। मुझे विश्वास हो गया था कि उसे फाँसी हो जायेगी और संसार यह समझता रहेगा कि मैं उसका बहुत बड़ा मित्र, वफा का पुतला, जान निछावर करने वाला और न जाने क्या-क्या था। खैर, संसार को तो अब भी अँधेरे में रखा जा सकता है—लेकिन सीमा—।

काश वह आई न होती।

मेरे जीवन को नर्क बनाने वाली सीमा है। उसके आते ही परिस्थितियाँ बिगड़ने लगीं।

मेरा विचार था कि सुशील को कुछ मालूम नहीं। लेकिन उसे सब कुछ मालूम है—उसने लिखा है कि मैं सीने पर कोई बोझ लेकर नहीं जाना चाहता—आप लोगों का दुःख मेरे लिए बोझ रहेगा। एक-एक शब्द पूरी कहानी है।—इशारों से भरपूर—हाँ, मैंने मधु को चाहा था तब से चाहता था जब कालेज में पहली बार देखा था। काश! यह लड़की मेरे और सुशील के बीच में न आई होती।

सुशील को जब मैं अपने घर लाया था, सचमुच उसे अपने छोटे भाई की तरह समझता था। उसके बिना चैन न आता था। बस, एक बार उससे जलन हुई थी जब वह एफ० ए० में फर्स्ट क्लास आया था। थोड़ी देर ही रही थी वह जलन! फिर उस दिन जब उसने प्रभाकर के भाषण का संशोधन किया था। यह बात कांटे की तरह चुभी थी कि हमारे टुकड़ों पर पलने वाला हमारे सामने अपने आपको हमसे योग्य समझता है। संयोग से उसी दिन सुशील ने यह बताया कि वह मधु से प्यार करता है।

मैं शायद एक नहीं हूं—शायद दो हूं—मेरे अन्दर दो रंजन हैं—एक वह है जो हमदर्द है—लोगों के काम आना चाहता है। किसी को दुःखी देखकर तड़प उठता है—तेज और बुद्धिमान है, जिम्मेदार है तथा बाप की मृत्यु के बाद घर की देखभाल कर रहा है। जिसका सब सम्मान करते हैं।

और एक रंजन वह है जो ईर्ष्यालु है—जो कभी किसी को आगे बढ़ते नहीं देख सकता। जिसके पास षड्यन्त्र रचने और

स्कीमें बनाने वाला मस्तिष्क है—जो बेरहम है। जिसकी आत्मा मरी हुई है।

नहीं—मैं एक हूं—मुझमें जो बुराइयां हैं, उनकी जिम्मेदार मेरी माँ है, जिसने सीमा का सर्वनाश किया। सीमा की बदनामियों ने मुझे मजबूर किया कि मैं अपने चारों ओर इतनी बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर लूं कि उस की बदनामियों की गर्म हवा मुझ तक न पहुंच सके।

मैं नहीं कह सकता कि मैं क्या हूं। बस इतना जानता हूं। कि जब सुशील मुझे मधु के बारे में अपनी कहानी सुना रहा था तो मेरा खून खौल रहा था, जी चाहता था कि उसे मार डालूं। उसका खून पी जाऊँ—लेकिन मैंने कुछ नहीं किया।

मुझे औरतों से हमेशा दिलचस्पी रही लेकिन मैंने जो कुछ किया पर्दे की आड़ में—किले बनाकर—रंगीन आवरण में ढककर। किसी को पता तक न चल सका कि मोटर के मॉडल की तरह हर साल प्रेमिका बदल डालता हूँ। उन दिनों कल्पना लिस्ट पर थी। इसलिए मैंने सुशील को कल्पना से मिला दिया था कि सुशील को कभी सन्देह तक न हो सके कि कल्पना के होते हुए मेरा झुकाव मधु की ओर है। लोग यह सोच भी नहीं सकते कि एक प्रेमिका के होते हुए दूसरी भी हो सकती है।

सुशील धोखे में आ गया। मैंने मधु को घर बदलवा दिया। मेरा ख्याल था कि वह मेरे एहसान से दब जायेगी, मेरे करेक्टर की ऊँचाई से प्रभावित होगी और सुशील के स्थान पर मुझे प्यार करने लगेगी। मैं उसके बापू को बापू और माँ को माँ कहता था। और हर घड़ी खूबसूरती से उसे यह अहसास कराता रहता था कि अगर मैं न होऊँ तो वह भूखे पेट रहेगी। सुशील उसके लिए कुछ न कर सकेगा। लेकिन वह न जाने किस मिट्टी की बनी थी।

विवश होकर मैंने सुशील को शहर भेज दिया। सीमा को उसके सुपुर्द कर दिया। मेरा ख्याल था कि सीमा आवारा है इसलिए सुशील उसके जाल में फँस जायेगा। यह भी विश्वास था कि इतने दिन सुशील के बाहर रहने पर मधु मेरी ओर आकर्षित हो जायेगी।

लेकिन यह भी न हुआ। कुछ न हुआ बल्कि यह हुआ कि मेरी रखैल जिसे नादिर खां अपनी पत्नी कहता था—सुशील पर लट्टू हो गई।

नादिर खां मेरा ही बनाया हुआ आदमी था। उसे मैंने ही तैयार किया था। वह स्वयं कुछ नहीं था। मैंने उसे समझा दिया था कि लोग यही समझें कि वह मेरा विद्रोही है और नादिर ने यही किया। मैं उसके हाथों नरेन्द्र सिन्हा को पिटवाना चाहता था। लेकिन वह दिनों-दिन ताकतवर होता चला गया। पैसे वाला हो गया। वह ऐश करने लगा और मैं उससे जलने लगा।

मैंने मधु की जमीन नादिर के द्वारा हड़पने की धमकी दिलवाकर सुशील को अपमानित कराना चाहा। मेरा ख्याल था कि जब सुशील नादिर से टकराएगा तो मार खायेगा और फिर ये लोग गिड़गिड़ाते हुए मेरे पास आयेंगे।

लेकिन यह भी नहीं हुआ।

सीमा सुशील को मेरे और नादिर के बारे में बताना चाहती थी लेकिन संयोग या सौभाग्य से वह भारत से बाहर चली गई।

और तब मैंने सोचा—जीवन की सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण योजना—मैंने सोचा कि नादिर को उस समय मधु के घर पर चढ़ा दूं, जब सुशील मौजूद हो। मैंने नादिर से कहा था कि वह मधु की बेइज्जती करे। सुशील यह देखकर उत्तेजित हो उठेगा। अगर सुशील नादिर को मार डालेगा तो मुझे नादिर से छुटकारा मिल जायेगा और नादिर की हत्या के आरोप में फाँसी हो जाने पर सुशील से भी मुक्ति मिल जायेगी, दोनों काँटे निकल जायेंगे।

लेकिन सुशील देर से पहुंचा। नादिर उससे पहले पहुंच गया। मैंने सरदार सिंह और दो आदमियों को सुशील की निगरानी पर लगा दिया था। मैं जब मधु के घर पहुंचा, तो नादिर वहां पहुंच चुका था। मधु के चीखने की आवाजें आ रही थीं। मैं मधु के सामने नादिर की पिटाई करके मधु पर अपना प्रभाव डालना चाहता था। मैं दौड़ा तो नादिर भाग छूटा। वह हमेशा का डरपोक था और उस समय नशे में भी था। मैंने उसे पकड़ लिया। वह सरदार सिंह और दूसरे दोनों आदमियों के सामने मेरे षड्यन्त्र का भंडाफोड़ करने लगा।

मैंने उसे गोली मार दी।

जब तक सुशील मेरे पास पहुंचा, मैं निश्चय कर चुका था कि हत्या का आरोप सुशील पर किस तरह थोपा जाए।

जब सुशील आया और मैंने उसका चेहरा देखा तो मुझे विश्वास हो गया कि सुशील इस आरोप को अपने सिर ले लेगा। फिर भी जितने भावुकतापूर्ण शस्त्र हो सकते थे, मैं उनका प्रयोग करता रहा और परिणाम मेरी आशा के अनुरूप निकला।

मैंने कोशिश की कि सुशील के मुकदमे की भी पूरी-पूरी पैरवी हो और साथ ही इस्तगासे की भी मदद कराई जाए। परिणाम-स्वरूप केस इतना शानदार बनता गया कि मैं चकित रह गया। मैं चाहता था कि इसी बीच मधु टूट जाए और मेरी ओर आ जाये, लेकिन पता नहीं उस पर सुशील ने क्या जादू कर रखा था कि वह मेरा सम्मान तो करती लेकिन आकर्षित ही नहीं हो पाई।

शेष आगामी अंक में
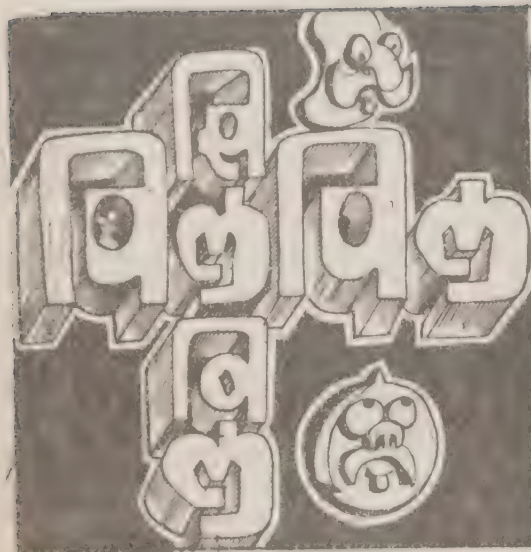
थमको कुछ पता भी है कि इस दुनिया में क्या हो रहा है । थमारे हरयाणे के कपिल देव को बोर्ड आफ क्रिकेट कंट्रोल ट्रेनिंग के लिये आस्ट्रेलिया भेज रहा है । थमारे होते हुए ऐसा हंधेर हो रिया है और थम हो कि रजाई में मुंह ढक कर आराम से सो रिये हो।
म्हारे हरयाणे के कपिल देव को ट्रेनिंग के लिये आस्ट्रेलिया भेजा जा रिया है, यह तो बोत खुशी की बात है । इसमें गम की क्या बात है ? आस्ट्रेलिया से म्हारा कपिल देव ट्रेनिंग लेकर आयेगा तो पाकिस्तान की टीम को जीरो पर आऊट करेगा और डबल, ट्रेबल और चारबल सेंचुरी बनायेगा । दुनिया में हरयाणा का नाम ऊंचा करेगा ।
शायद यह चूहा म्हारे कपिल देव से जलता है । इस चूहे को मैं किसी दिन तन्दूर में गर्म करके बिल्ली आंटी के सामने डाल दूंगा, फिर इसे अपनी औकात का पता लगेगा । इसको महसूस हो जायेगा कि क्रिकेट के बाल का वजन इसके वजन से दूना होता है ।
थम दोनों मुझे गलत समझ रिये हो । मैं थारी भलाई की बात ही कर रिया हूँ । थमारे होते अगर और कोई कपिल देव को आस्ट्रेलिया भेजेगा तो थमारा कपिल देव पर क्या हक रह गया ? वह जब चौके और छक्के मारेगा तब थमको पहले वाला मजा कहां आयेगा क्योंकि वह तो किसी और के खर्चे पर हुयी ट्रेनिंग का फल होगा । हरयाणा वालों का कपिल देव पर आधा हक भी नहीं रह जायेगा । फिर थम कपिल के छक्का लगाने पर किस मुंह से पहले की तरियों उछल कर सोफे के स्टेनलैस स्टील के स्प्रिंग तोड़ोगे ? कपिल देव की बालिंग व बैटिंग हरजाई हो जायेगी ।
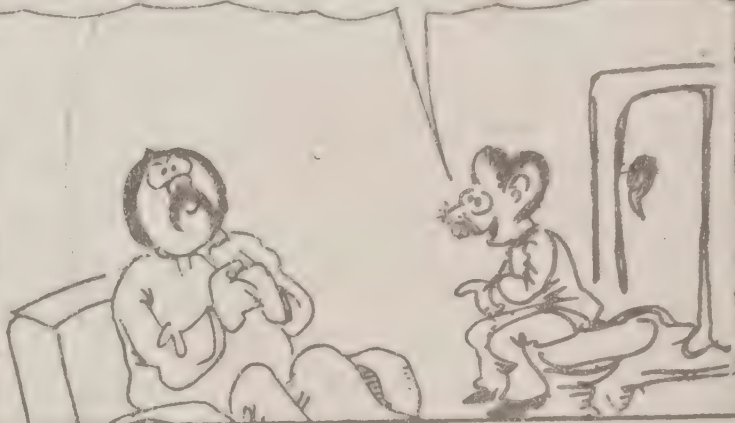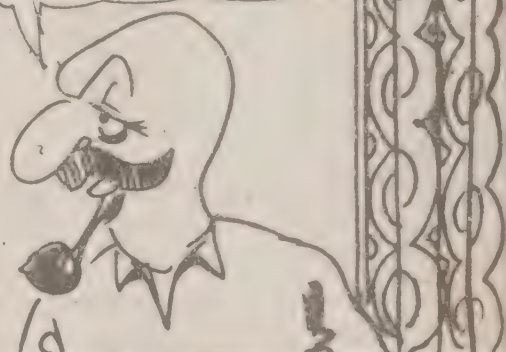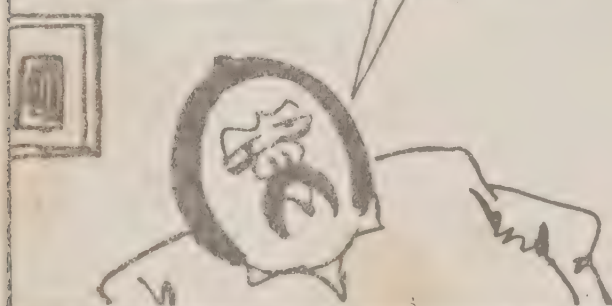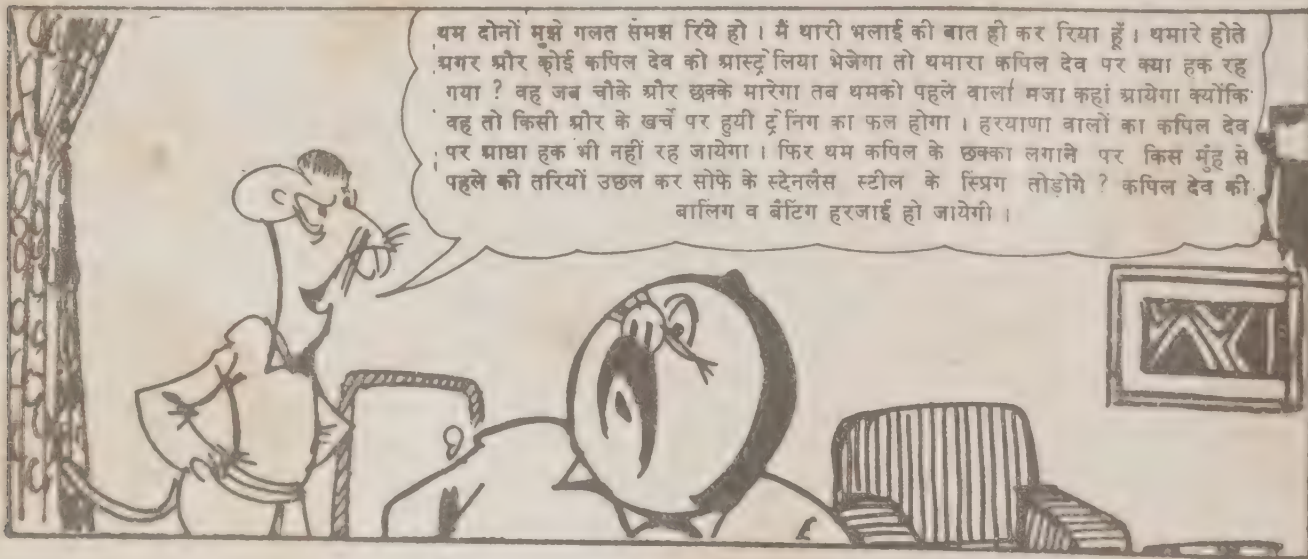
भाई जी इस चूहे ने हमारी आँखें खोल दीं । हम तो अनर्थ करने जा रहे थे । अपने कपिल देव को पराये हाथों में बेचने जा रहे थे इस चूहे को कुछ इनाम मिलना चाहिये ।
PRIZE
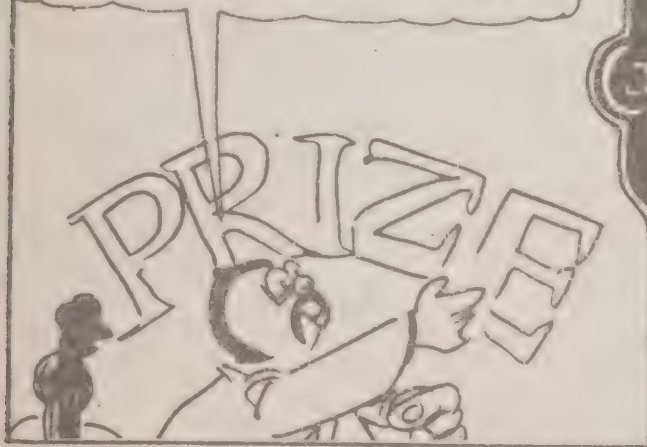
इसको हम इनाम में एक ट्रांजिस्टर दे देंगे । कपिल हमारा है और हमारा ही रहेगा । हम उसकी ट्रेनिंग का खर्चा खुद देंगे, किसी दूसरे को बीच में कूदने की जरूरत नहीं है । क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड से कहो कि अपने गन्दे हाथ म्हारे कपिल से दूर रखें । हमने कभी दूसरों का जूठा नहीं खाया है ।
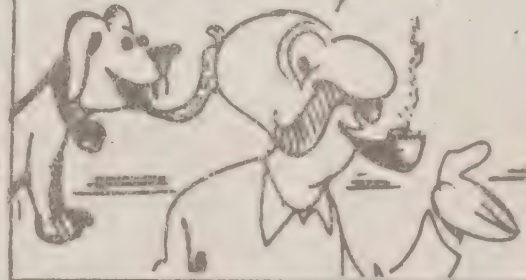
बॉस, थम दोनों ने सिर्फ एक बार दूसरों का जूठा खाया था । पिछले साल फसल के पैसे आने पर थम दोनों लॉन में रम पी रहे थे । थारे बीच फ्राईड मीट की प्लेट पड़ी थी । बीच में एक कुत्ता भी आकर थारी प्लेट में खाने बैठ गया था । थम दोनों भी उसी प्लेट से खाते रहे । सिलबिल नशे में उस कुत्ते को पिलपिल समझता रहा और थम उसे सिलबिल समझ कर खूब प्यार से खाते रहे ।
चूहे बकवास बन्द कर, यह पच्चीस हजार का चैक कैश करवा कर ले आ । हम आज ही कपिल को पैसे भेज देंगे ।
टी. एम. ओ. कर देंगे ।

थारा चैक तो बैरंग ही वापिस आ गिया ! बैंक में पैसे नहीं हैं ।
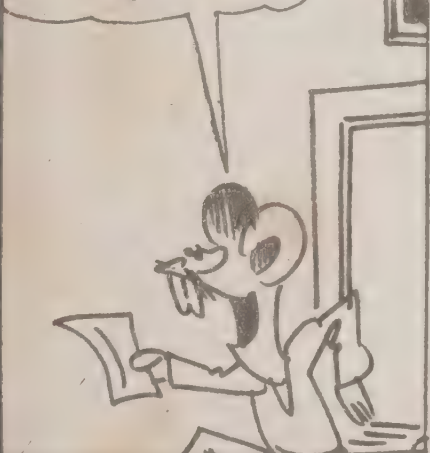
बैंक मां पैसे नहीं हैं ? इतना बड़ा इस्टेट बैंक है और उनके पास पैसे नहीं हैं । हद हो गयी । इस दुनिया में बैंक वालों का भी ऐतबार नहीं रहा । कौन आदमी ऐसे बैंक पर विश्वास करेगा जिसके पास पच्चीस हजार रूपल्ली भी नहीं हैं ?
घोर कलजुग आ गया है । अब हम अपने पैसे अपने पास ही रखेंगे ।

चौधरी साहब, बैंक वालों के पास तो बोत पैसे हैं। थम चाहो तो पचास लाख रुपया निकाल लो। बात यह है कि थारे एकाऊंट में पैसे नहीं हैं। कुल बैलेंस पच्चीस रुपये तीस पैसे पड़े हैं। बैंक वाले कहने लगे कि यहाँ कोई धर्म खाता खुला है।
उनकी यह मजाल ? उनको पता नहीं है कि इब वित्तमंत्री कौन है ? हम आज ही जाकर वित्तमंत्री श्री चौधरी चरणसिंह जी से बैंक वालों की शकैत करेंगे, सबकी नौकरियां छुड़वा देंगे। हरयाणा के चौधरी का चैक वापिस कर दिया ?

अब तो एक ही रास्ता है, मैं आज ही गुड़गांव अपने गाम चला जाता हूं और एक खेत बेच कर पैसे लेकर वापिस आ जाऊंगा, जितनी जल्दी से जल्दी हो सके उतनी जल्दी।
खेत बेचने और रजिस्ट्री वगैरह करवाने तथा पटवारी को ढूंढने में काफी वक्त निकल जायेगा। इस बीच अगर पहले ही कोई कपिल देव को ट्रेनिंग फाइनेंस कर दे तो थमारे खेत बेचने का क्या फायदा होगा। खेत भी हाथ से जायेगा, कपिल देव भी।
हमें यहीं जल्दी रुपयों का प्रबन्ध करना होगा।
फौरन ! वरना थम फास्ट बॉलिंग की बाजी हार जाओगे।

हमें यहीं पैसे पैदा करने होंगे।
यहाँ कैसे पैदा होंगे ? खेत तो म्हारे हरयाणा में हैं।
मैं आलू पैदा करने की बात नहीं कर रहा हूं। हमारे पास समय कम है और समय ही सबसे कीमती चीज है।
कबाड़ी वाला म्हारा कीमती समय खरीदेगा ?
हमें कोई स्कीम बनानी पड़ेगी। पैसा पैदा करने के लिये हथेली पर सरसों जमाने को। चुटकी बजाते पैसे पैदा करने की।
हथेली पर सरसों जमाना है तो देहाती पुस्तक भंडार से, असली प्राचीन जादू की किताब मंगा लो।

भाइयों, बहनों ग्रौर चूहों, यह हमारी परीक्षा की घडी है । भारत ग्रौर सारा क्रिकेट जगत का भविष्य हम पर निर्भर करता है । हमें किसी तरह भी पैसे पैदा करके कपिल देव को ट्रेनिग के लिये ग्रास्ट्रेलिया भेजना है । गीता में कृष्ण जी ने कहा है कि जब-जब धर्म का ह्रास होता है तो मैं जन्म लेता हूं । उसी तरह जब-जब भारत में क्रिकेट का पतन होता है तो हरयाणा में फास्ट बालर क्रिकेट का बेडा पार लगाने के लिये पैदा होता है । ग्रब हमारे सामने समस्या पैसों की है । इस पूंजीवादी समाज व्यवस्था में पैसे प्राप्त करने का हमारे पास एक ही रास्ता रह गया है ग्रौर वह है···
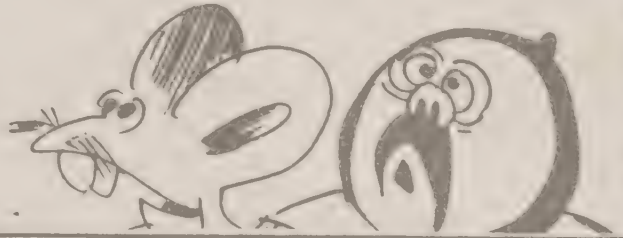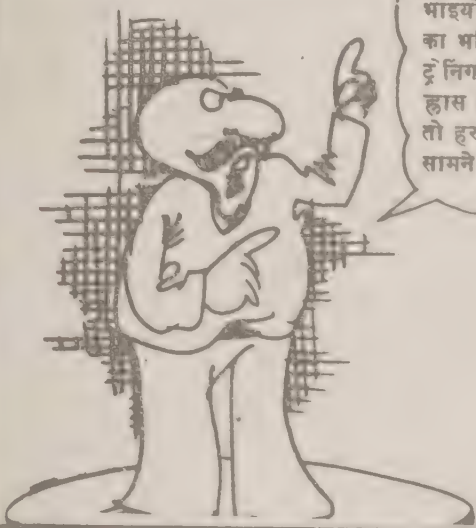
बैंक पर डाका
हां, बस यही एक रास्ता रह गया है । बलिदान देने के लिये कमर कस लो ।
कमर कसना है तो पहले तीनों जाकर चांदनी चौक से चमड़े के बैल्ट खरीद लाते हैं । उन्हें कस कर बांध कर हम डाके की पूरी योजना बनायेंगे ग्रौर दुनिया में तहलका मचा देंगे ।
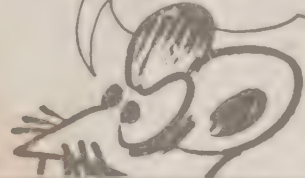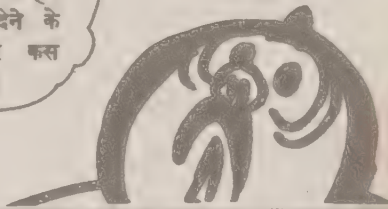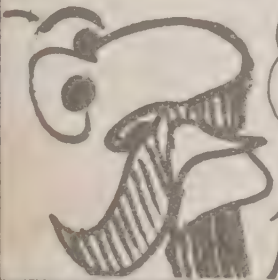
Scheming
तैयारियां
नकाब
पिस्तौल
ग्राज दोपहर को बारह बजे तीन नकाब पोश लॉयड बैंक के करोल बाग ब्रांच पर सनसनी खेज डाका डालेंगे ग्रौर लाखों रुपये लूट कर ले जायेंगे । पुलिस ग्रौर पहरेदार सब देखते रह जायेंगे । डाके के बाद तीनों नकाब पोश ऐसे गायब हो जायंगे जैसे गधे के सिर से सींग पुलिस दीदे फाड़ती रह जायेगी कि उनको जमीन निगल गयी या ग्राकाश ।
ग्रगले ग्रंक
में
'बैंक पर
डाका
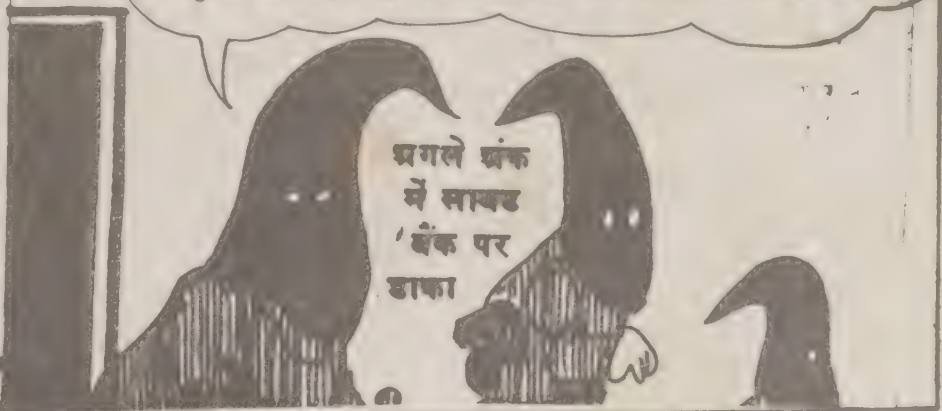
आपके पत्र

दीवाना का नया अंक ४ मिला मुख पृष्ठ काफी अच्छा था। भगवान को लिखे गए पत्र काफी मजेदार थे। धारावाहिक उपन्यास भी अच्छा रहा। पिलपिल सिलबिल मोटू-पतलू भी अच्छे रहे। फीचर फिल्म देखने का अजनबी मजा लाजवाब रहा। कहानी कवियों के फेरे में भी हास्यप्रद रही। बाकी सारे फीचर काबिल-ए-तारीफ थे। ये अंक काफी मजेदार रहा। आशा है अगला अंक भी रोचक होगा व समय पर मिलेगा।

जुबैर अहमद—चाणक्यपुरी

दीवाना अंक तीन में 'दस पैसे में आ गले लग जा' काफी पसन्द आयी। 'बलिदान किसका' भी काफी रोचक थी। सिलबिल-पिलबिल पढ़कर तो हंसी का ठिकाना न रहा और मोटू पतलू के मारे तो दीवाना हो जाना पड़ा। आप दीवाने में वर्ग पहेली की जगह कुछ और देने लगें तो अच्छा रहेगा क्योंकि दीवाने को बच्चे ही पढ़ते हैं और बच्चों में इतना दिमाग नहीं हैं। अगर आप इसकी जगह कुछ और देने लगें तो मैं आपका बहुत आभारी होऊंगा।

सआवत हुसैन अलवी—पीलीभीत

'दीवाना' का चटपटा व मनोरंजन से भरपूर अंक ३ बहुत ही धमाके के साथ आज प्राप्त हुआ, पाकर आनंद विभोर हो गया। हर अंक की तरह सारी सामग्री ने दिल गुदगुदा कर रख दिया मगर, फिल्म पैरोडी 'खालीमार' पढ़कर तो बस मजा ही आ गया।

कृपया पैरोडी में पात्र-परिचय के साथ हास्य पैरोडी के लेखक का भी परिचय दिया करें!

'इन्हें भी आजमाइये' के अन्तर्गत, प्रकाशित सारे नुस्खे एक से बढ़कर एक थे! अन्य कहानियाँ व लेखों ने भी हास्य भरा मनोरंजन किया। इस आकर्षक व मसालेदार अंक के लिए 'दीवाना' परिवार को मेरी हार्दिक बधाई।

श्याम माहेश्वरी 'अशोक'—फारबिस गंज

हमसे छिपाया गया था खजाना,
किसी के आगोश में छिपा था दीवाना
एक रोज मेरी नजर उसपे क्या पड़ी,
बस उस रोज से मैं हो गया उसका दीवाना,
चिल्ली की बातों का मजा, मोटू के हँसने का ढंग,
यह सब याद आता हैं मुझे रोजाना।
अगर मैं चाहूँ एक दिन न देखूं उसे,
तो भूल जाता हूँ मैं उस दिन मुस्कराना।
मेरी दुआ है यह, कयामत तक कायम रहे,
और अपने आशिकों को हँसी से बनाता रहे दीवाना।
'अख्तर नाज' उस मुस्कराहट को भूल सकता नहीं,
जो हर हफ्ते देता है दीवाना।

जुबैर 'अख्तर नाज'—बिलारी
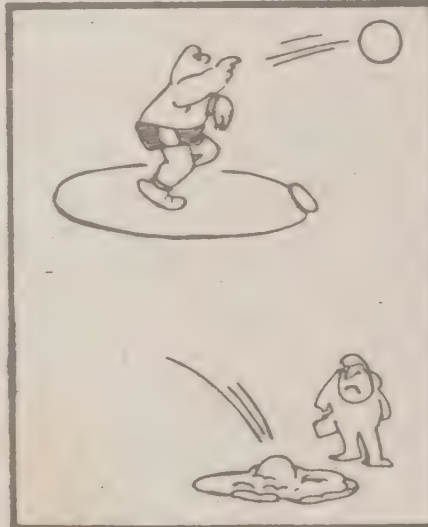
दीवाना का नया अंक नं० ३ बहुत पसन्द आया। चिल्ली साहब को अपनी बीन से धुंए को सांप के समान उड़ाते देखा तो खूब हँसी आई। इसमें दीवाना के दीवाने स्तम्भ, मोटू पतलू, पिलपिल सिलबिल, चिल्ली लीला, परोपकारी, ने हमेशा की तरह इस बार भी बेहद हँसा-हँसा कर पेट में दर्द किया! बन्द करो बकबास के गीत भी सुन्दर थे।

दिनेश मटाई 'राजा'—इन्दौर

दीवाना के अंक ३ व ४ मिले, पढ़ कर दिल को बहुत प्रसन्नता हुई कि आपने अब एक नई प्रतियोगिता 'पहचानिये कौन' आरम्भ कर दी है तथा यह हमें बहुत पसन्द आई। वैसे दोनों अंकों के मुख्य पृष्ठों ने भी काफी मनोरंजन किया। अन्दर की सामग्री के तो कहने ही क्या हैं। आजकल मोटू-पतलू के कारनामे काफी दिलचस्प चल रहे हैं। हमें आशा है कि भविष्य में दीवाना इसी तरह हमारा मनोरंजन करता रहेगा।

गनेश मित्तल हलवाई—गाजियाबाद

दीवाना पढ़ते-पढ़ते बचपन से युवा हो गया हूं, दीवाना अभी भी मनोरंजक बना है, सदैव इन्तजार रहता है।

मुझे आशा है कि अब तक 'सिलबिल-पिलपिल' के किये गये कारनामों का संग्रह जरूर छपा होगा, यदि छपा है तो मिलने का विवरण लिखियेगा, और अभी तक नहीं छपा हो तो कृपया जरूर व जल्दी छपवाईयेगा तथा इस संबंध में आप अन्य पाठकों से भी राय आमंत्रित कीजिये!

प्राण चड्ढा—बिलासपुर

अभी तक तो पिलपिल-सिलबिल के कारनामों का संग्रह नहीं छपा है? हां, यदि पाठकों की मांग ज्यादा हुई तो उसके छपवाने पर विचार अवश्य किया जायेगा।

—सं०

दीवाना अंक २ प्राप्त हुआ। चिल्ली लीला बेहद पसन्द आई। चिल्ली द्वारा डा० कर्णसिंह को लिखा प्रेमपत्र हास्य से परिपूर्ण था। अन्य स्थाई स्तम्भ परोपकारी, पिलपिल-सिलबिल तथा मोटू-पतलू ने हंसा-हंसा कर मुझे दीवाना बना दिया।

किशोर निर्मला होतवानी—रायपुर

मैंने दीवाना का अंक नं० ३ पढ़ा। बहुत पसन्द आया। सभी स्थायी स्तम्भ अच्छे थे। कहानियों में धारावाहिक उपन्यास सुबह का तारा (संगीता), दस पैसे में आ गले लग जा (मोहन प्रकाश अग्रवाल) कहानियां बहुत पसन्द आईं। लेखकों को मेरी ओर से बहुत-बहुत धन्यवाद।

प्रदीप कुमार गुजराती—सक्कर
अमर नारायण खन्ना—अमृतसर

दीवाना अंक २ प्राप्त हुआ। बहुत ही रोचक था। मुख पृष्ठ देखकर बहुत हंसी आई। मैं काफी समय से दीवाना पत्रिका पढ़ता आ रहा हूं। मुझे दीवाना बहुत ही ज्यादा अच्छी लगती है। निःसंदेह आपकी प्रकाशित सारी सामग्री बहुत ही रोचक थी।

महेश कुमार बारीवाल—संबरिया

रहस्यमई घटनाओं से भरपूर

मोटू पतलू की रंगीन कहानी

पिछले दिनों घसीटाराम और उसके मित्र भाई छछून्दर ने पुस्तकें पढ़कर जूडो के दाव पेंच सीखे थे और अपने घर के पिछवाड़े एक उजाड़ जगह पर एक दूसरे को जूडो के हाथ दिखा रहे थे। वहीं एक पेड़ के नीचे दो आदमी बेलचा लिए धरती में कुछ दबा रहे थे। उन दोनों को इस बात का शक हुआ कि घसीटाराम और उसके साथी ने उनका राज जान लिया है। वास्तव में इन्हें कोई राज पता नही लगा था। फिर भी वे दोनों आदमी घसीटाराम और उसके साथी की जान के दुश्मन बन गये। चेलाराम वहां बीच बचाव कराने आया तो वे उससे उलझ पड़े। तभी हवा में चीखों की आवाज सुनाई दी। सबने ऊपर सर उठाकर देखा तो वहां एक बहुत बड़ी उड़न मछली एक झगड़ालू आदमी पर हमला करने वाली थी। चेलाराम ने बेलचे से मछली का पेट चीर कर उसका काम तमाम कर दिया। यह मछली बहुत दूर उजाड़ जंगल में बने एक गुमनाम और टूटे-फूटे पुराने किले से आई थी।

यह था किले का बाहरी दृश्य। किले के अन्दर की दुनिया क्या है? यह वहां कोई नहीं जानता था।
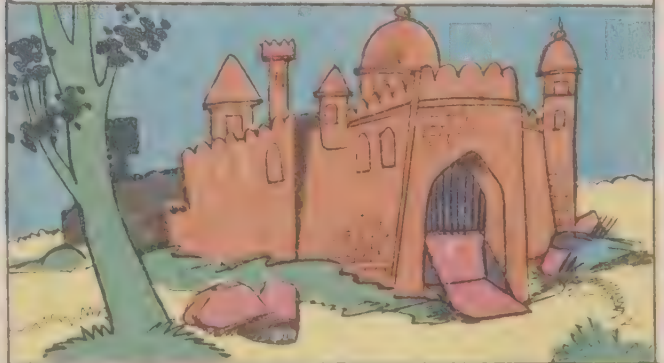
वहां एक बहुत बड़ी नागिन खजाने के एक बक्स पर कुण्डली मारे बैठी थी। उसके सामने शीशे का एक ग्लोब था जिस में चेलाराम घसीटाराम और उनसे लड़ाई मोल लेने वाले आदमियों की तस्वीरें दिखाई दे रही थी। यह नागिन एक भयंकर घटना चक्र का जाल बुन रही थी। उसमें यह शक्ति थी कि अपने माया प्रताप से जब चाहे एक सुन्दर लड़की का रूप धारण कर सकती थी।

जी हां, यह था उनका बदला हुआ रूप ।

पर अब तो वह आदमी उस लड़के के दूसरे साथियों से उलझ रहे हैं। वे उन साथियों को मार ही दें तो अच्छा है। नहीं तो यह मेरे काम में रुकावट बनेंगे।
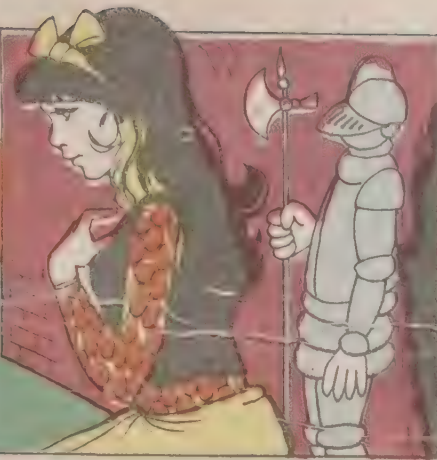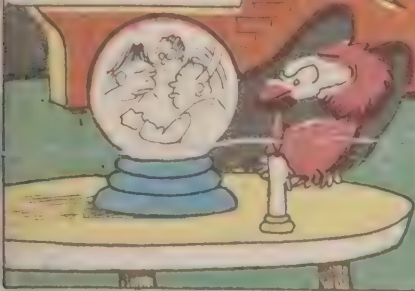
मुझे चुपचाप यहीं इस उजाड़ किले में रहकर यह देखना चाहिये, इनकी लड़ाई का अन्त क्या होता है ?
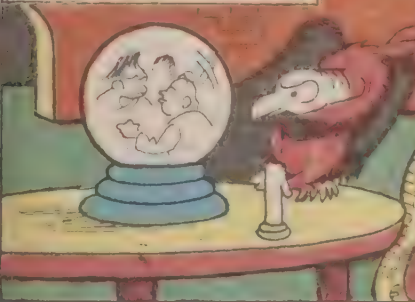
तुमने समझा क्या है अपने आपको, जो मेरे मित्र को मार रहे हो।
मित्र के साथ तुम्हें भी मारेंगे। क्योंकि तुम हमारा राज जान गये हो।

कौन-सा राज जान गये हैं ? हमें तुम्हारे किसी राज का पता नहीं है।
यह घसीटाराम नहीं है जो मार खायेगा और खून का घूंट पीकर रह जाएगा। मेरे जूडो मास्टर को ताव आ गया तो पता है यह क्या करेगा ?
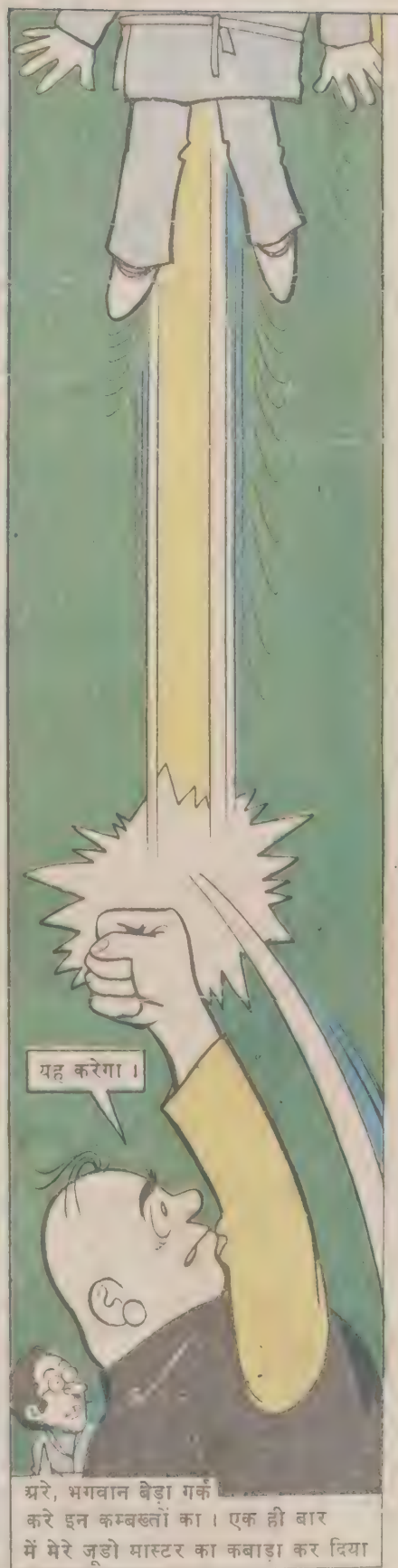
यह करेगा।
अरे, भगवान बेड़ा गर्क करे इन कम्बख्तों का। एक ही बार में मेरे जूडो मास्टर का कबाड़ा कर दिया

मेरे सारे नट बोल्ट ढीले करवा दिये । अब तू इन्हें बता दे घसीटाराम, कि तुझे ताव आ गया तो तू क्या करेगा ।
हे भगवान, मैं तेरे मन्दिर में बीस साल तक घण्टे बजाता रहूंगा । तू मुझे इस घंटाघर से बचा ले ।

अब तुम्हारी बारी है । बताना क्या कह रहे थे हमारे बारे में ?
मैं तो अपने बारे में कह रहा था माई बाप । मैं पहले दर्जे का नालायक हूं । निकम्मा हूं । मुझ से तो तुम्हारे जूते पर जमी धूल बढ़िया है ।
हमारे जूते पर धूल जमी है ? वहां पेड़ के नीचे मिट्टी खोदने से धूल जमी है । मतलब है तुम हमारा राज जानते हो !
तुम मेरी कब्र खोदने पर तुले हुए हो । मैं तो बस इतना राज जानता हूं ।
कब्र खोदी है ? मतलब है इसने सब कुछ देख लिया । यह हमारा राज जानता है । इसे जिन्दा छोड़ना ठीक नहीं है उस्ताद ।

इस बेंगन का भी भुर्ता बनाकर मेरा काम आसान कर रहे हैं ।

लड़ने दो इन्हें आपस में । वह लड़का तो सुरक्षित है, मुझे बीच में नहीं पड़ना चाहिये ।

बताना, कितने साल का तजुर्बा है तुम्हें जूडो में ।
मुझे कितना भी तजुर्बा हो, पर तुम्हें शराफत दिखाने में धेले का तजुर्बा भी नहीं है ।
हे भगवान ! यह सब क्या हो रहा है ?
समझ लो कि यहाँ जनता पार्टी की मीटिंग हो रही है और तुम्हारे विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव पास किया जा रहा है ।
अरे मर गये
अब पता लगेगा कि हमारा राज देखने का अन्जाम क्या होता है ?
अरे मार दिया । अरे राज मेरी आंखों ने देखा है तो आंखें फोड़ दो सारे बदन का चूरा क्यों कर रहे हो ।
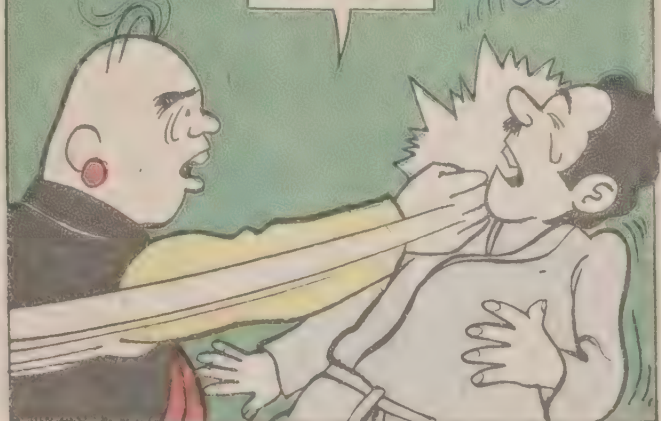
क्या कहा चूरा कर रहे हो। ग्ररे उस्ताद यह तो सारा राज जानता है। इसकी बोटी-बोटी नोंच लो।
ग्ररे घनचक्करों, मेरी जान लेने से पहले यह तो बता दो, कि तुम्हारा राज क्या है, ताकि इस बात पर मैं इतमीनान से मर सकूं कि मैंने तुम्हारा राज जानने की भूल की थी।

तभी वहां मोटू पतलू और डाक्टर झटका भी आ गये ।
अरे यह क्या हो रहा है ? तुमने यह क्या हाल कर दिया । हमारे यार का ?

हम इसे जुडो के हाथ दिखाने को कह रहे थे ।
क्या इसने हाथ दिखाये ?

हां, एक हाथ दिखाया है । वह यह रहा ।
अरे अक्ल के चर्खों, घसीटाराम का हाथ तोड़ दिया ।

दो का तो सफाया हुआ । अब यह दांतों वाला करेला रह गया है, वह कह रहे थे राज इसे बता देंगे ।
इससे पहले हम इसे ऊपर वाले का पता बता देंगे ।

दूसरी ओर नाग सुन्दरी अपने दूरदर्शी ग्लोब में झगड़े की यह हालत देखकर परेशान हो रही थी ।
यह झगड़ालू अब फिर चेलाराम से उलझ रहे हैं ।
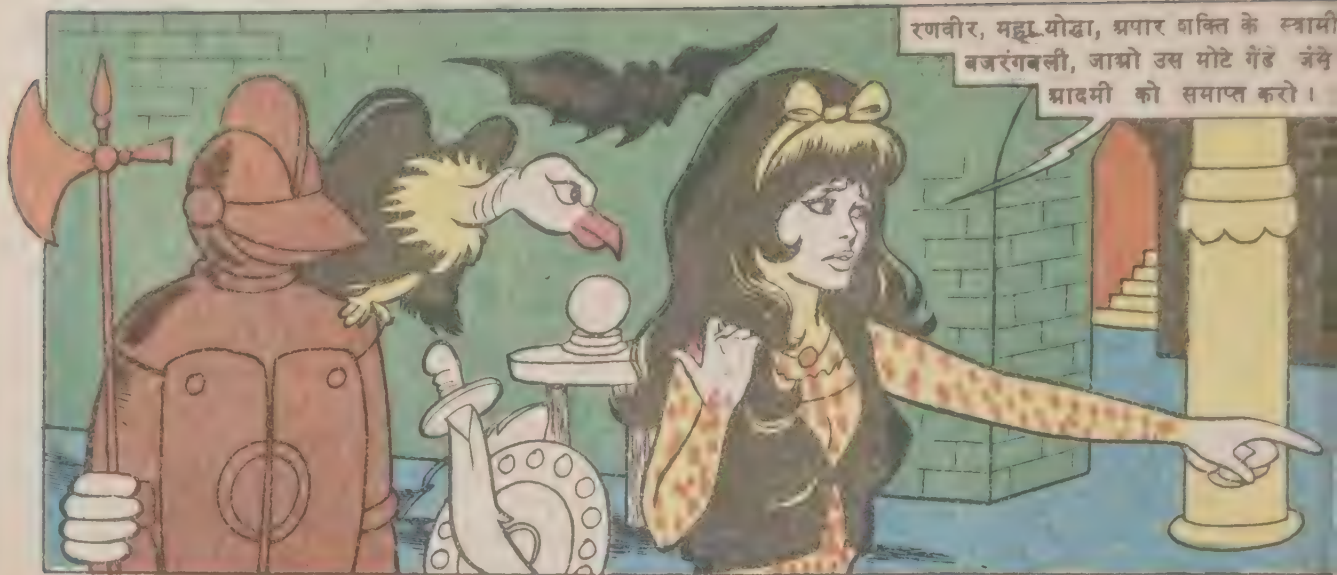
रणवीर, महा योद्धा, अपार शक्ति के स्वामी बजरंगबली, जाओ उस मोटे गेंडे जैसे आदमी को समाप्त करो।
कमाल हो गया, तुम जैसी मोटी अक्ल का आदमी मैंने आज तक नहीं देखा। मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि तुम्हारा और मेरा झगड़ा किस बात का है? मेरा कसूर क्या है जिसकी तुम मुझे सजा दे रहे हो?
इन्दिरा गांधी को सजा देने वाले को पता नहीं कि उसका कसूर क्या है, तुम इनसे बात कर रहे हो। इनका काम तो केवल सजा देना है।
तभी नाग सुन्दरी के महाशक्तिशाली बजरंगबली ने मोटे झगड़ालू पर हमला कर दिया।
अरे बचना भाई यह क्या मुसीबत आई तुम पर।
चेलाराम ने एक झटके से उस मोटे झगड़ालू को परे धकेल दिया और बजरंगबली का वार खाली गया।
रहस्यपूर्ण और खतरनाक घटनाओं से भरपूर इस चित्रकथा का अगला भाग आगामी अंक में देखना न भूलिये।
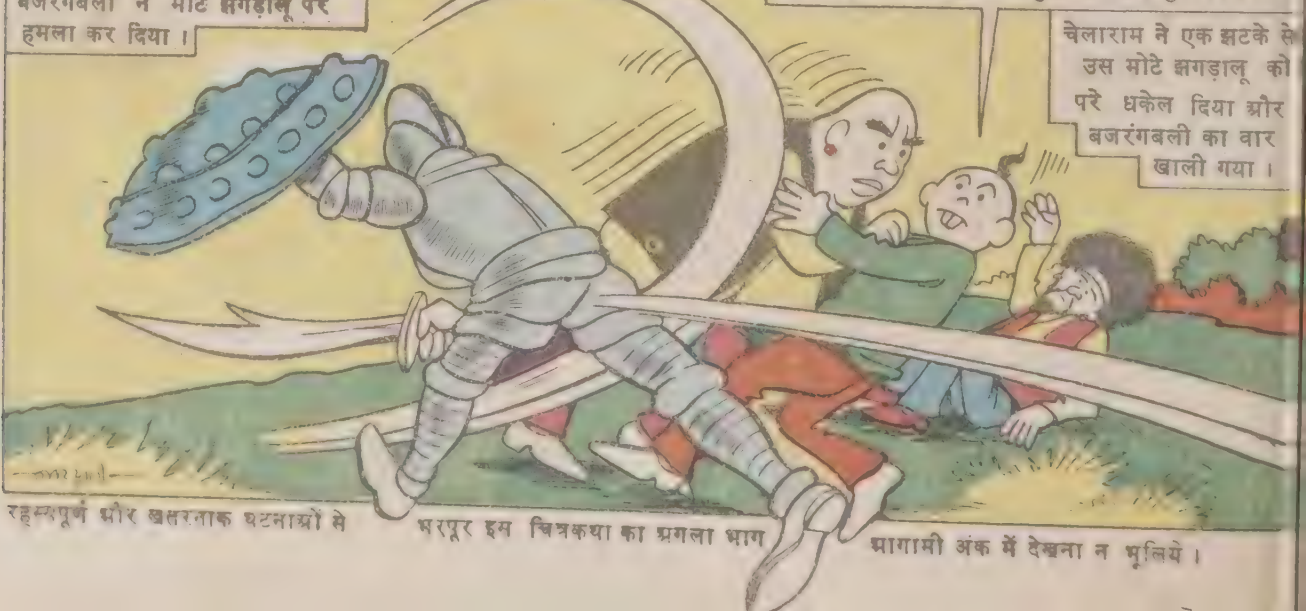
खेल खेल में

भारत के विरुद्ध शतक लगाने वाले बल्लेबाजों की सूचि
(भारत-वैस्ट इन्डीज कलकत्ता टैस्ट १९७८-७९ तक)

क्रम सं०	खिलाड़ी का नाम	रन संख्या	देश	स्थान	वर्ष
१.	बी. एन. वलेन्टिव	१३६	इंग्लैण्ड	बम्बई	१९३३-३४
२.	सी. एफ. वाल्टर्स	१०२	,,	मद्रास	,,
३.	डब्ल्यू. आर. हामन्ड	१६७	,,	मानचेस्टर	१९३६
४.	डब्ल्यू. आर. हामन्ड	२१७	,,	ओवल	,,
५.	टी. एस. वार्टिंग्टन	१२८	,,	,,	,,
६.	जे. हार्डस्टाफ	२०५	,,	लार्डस	१९४६
७.	डी. जी. ब्रैडमैन	१८५	आस्ट्रेलिया	ब्रिसबियन	१९४७-४८
८.	डी. जी. ब्रैडमैन	१३२	,,	मेलबोर्न	,,
९.	डी. जी. ब्रैडमैन	१२७	,,	,,	,,
१०.	ए. आर. मोरिस	१००	,,	,,	,,
११.	टी. बार्नस	११२	,,	एडलिड	,,
१२.	डी. जी. ब्रैडमैन	२०१	,,	,,	,,
१३.	ए. एल. नेसिठ	१९८	,,	,,	,,
१४.	नील हार्वे	१५३	,,	मेलबोर्न	,,
१५.	सी. एल. वालकट	१५२	वेस्ट इन्डीज	नई दिल्ली	१९४८-४९
१६.	जी. ई. गोम्स	१०१	,,	,,	,,
१७.	जी. डी. वीकेन्स	१२८	,,	,,	,,
१८.	आर. जे. क्रिस्वेनी	१०७	,,	,,	,,
१९.	ए. एफ. रे	१०४	,,	बम्बई	,,
२०.	जी. डी. वीकेन्स	१९४	,,	,,	,,
२१.	जी. डी. वीकेन्स	१६२	,,	कलकत्ता	,,
२२.	ई. डी. वीकेन्स	१०१	,,	,,	,,
२३.	सी. एल. वाल्कट	१०८	,,	,,	,,
२४.	आई. बी. स्टॉलमेयर	१६०	,,	मद्रास	,,
२५.	ए. एफ. रे	१०९	,,	,,	,,
२६.	ए. आई. वाटकेन्स	१३८	इंग्लैण्ड	नई दिल्ली	१९५१-५२
२७.	टी. डब्ल्यू. ग्रेवनी	१७५	,,	बम्बई	,,
२८.	एल. हटन	१५०	,,	लार्डस	१९५२
२९.	टी. जी. ईगान	१०४	इंग्लैण्ड	लार्डस	,,
३०.	एल. हटन	१०४	,,	मानचेस्टर	,,
३१.	डी. एस. शपर्ड	११९	,,	ओवल	,,
३२.	नजार मुहम्मद	१२४	पाकिस्तान	लखनऊ	,,
३३.	ई. डी. वीकेन्स	२०७	वेस्ट इन्डीज	पोर्ट आफ स्पेन	१९५३
३४.	बी. एच. परियानडियान	११५	,,	,,	,,
३५.	ई. डी. वीकेन्स	१६१	,,	,,	,,
३६.	सी. सी. वेल्कट	१२५	,,	जार्ज टाऊन	,,
३७.	एफ. डब्ल्यू. वारेल	२३७	,,	किंग्स्टन	,,
३८.	ई. डी. वीकेन्स	१०९	,,	,,	,,
३९.	सी. एल. वाल्कट	११८	,,	,,	,,
४०.	हनीफ मुहम्मद	१४२	पाकिस्तान	बहावलपुर	१९५५
४१.	अली मुद्दीन	१०३	,,	कराची	,,
४२.	आई. डब्ल्यू. म्यूरी	१०२	न्यूजीलैण्ड	हैदराबाद	१९५५-५६
४३.	बी. सचलिफ	२३०	,,	नई दिल्ली	,,
४४.	आई. आर. रीड	११९	,,	,,	,,
४५.	आई. आर. रीड	१२०	,,	कलकत्ता	,,
४६.	आई. डब्ल्यू. बर्क	१६१	आस्ट्रेलिया	बम्बई	१९५६
४७.	नील हार्वे	१४०	,,	,,	,,
४८.	जी. एस. सोबर्स	१४२	वेस्ट इन्डीज	बम्बई	१९५८-५९
४९.	जी. एस. सोबर्स	१९८	,,	कानपुर	,,
५०	आर. बी. कन्हाई	२५६	,,	कलकत्ता	,,
५१	बी. बुचर	१०३	,,	,,	,,
५२.	जी. एस. सोबर्स	१०६	,,	,,	,,
५३.	बी. बुचर	१४२	,,	मद्रास	,,
५४	जे. के. होल्ट	१२३	,,	नई दिल्ली	,,
५५.	ओ. जी. स्मिथ	१००	,,	,,	,,
५६.	जे. सोलमन	१००	वेस्ट इन्डीज	नई दिल्ली	,,
५७.	पी. बी. एचमे	१०६	इंग्लैण्ड	नॉटिंघम	१९५९
५८.	एम. सी. काउड्रे	१६०	,,	लीड्स	,,
५९.	जी. पुलर	१३१	,,	मानचेस्टर	,,
६०.	एम. आई. के. स्मिथ	१००	,,	,,	,,
६१.	नील हार्वे	११४	आस्ट्रेलिया	नई दिल्ली	१९५९-६०
६२.	नील हार्वे	१०२	,,	बम्बई	,,
६३.	एन. ओ. नील	१६३	,,	,,	,,
६४.	एन. फेमेल	१०१	,,	मद्रास	,,
६५.	एन. ओ. नील	११३	,,	कलकत्ता	,,
६६.	हनीफ मुहम्मद	१६०	पाकिस्तान	बम्बई	१९६१-६२
६७.	सईद अहमद	१२१	,,	,,	,,
६८.	इमत्याज अहमद	१३५	,,	मद्रास	,,
६९.	सईद अहमद	१०३	,,	,,	,,
७०.	मुश्ताक मुहम्मद	१०१	,,	नई दिल्ली	,,
७१.	के. बेरिंग्टन	१५१	इंग्लैण्ड	बम्बई	,,
७२.	जी. पुलर	११९	,,	कानपुर	,,
७३.	के. बेरिंग्टन	१७२	,,	,,	,,
७४.	बारबर	१२५	,,	,,	,,
७५.	के. बेरिंग्टन	११३	,,	नई दिल्ली	,,
७६.	ई. मेकमोरिस	१२५	वेस्ट इन्डीज	किंग्स्टन	१९६२
७७.	आर. कन्हाई	१३८	,,	,,	,,
७८.	जी. एस. सोबर्स	१५३	,,	,,	
७९.	आर. कन्हाई	१३९	,,	पोर्ट आफ स्पेन	,,
८०.	जी. एस. सोबर्स	१०४	,,	किंग्स्टन	,,
८१.	एम. सी. काउड्रे	१०७	इंग्लैण्ड	कलकत्ता	१९६४
८२.	एम. सी. काउड्रे	१५१	,,	नई दिल्ली	,,
८३.	बी. आर. नाइट	१२७	,,	कानपुर	,,
८४.	पी. एच. पारफिट	१२१	,,	,,	,,
८५.	बी. सचलिफ	१५१	न्यूजीलैण्ड	कलकत्ता	१९६५
८६.	बी. आर. टेलर	१०५	,,	,,	,,
८७.	जी. डाउलिंग	१२९	,,	बम्बई	,,
८८.	सी. सी. हंट	१०१	वेस्ट इन्डीज	बम्बई	१९६६-६७
८९.	जी. एफ. बॉयकट	२४६	इंग्लैण्ड	लीड्स	१९६७
९०.	बी. डालीवर	१०९	,,	,,	,,
९१.	टी. डब्ल्यू. ग्रेवनी	१५१	,,	लॉड्स	,,
९२.	आर. डब्ल्यू. काऊपा	१०८	आस्ट्रेलिया	एडलिड	१९६७-६८
९३.	डब्ल्यू. एम. लॉरी	१००	,,	मेलबोर्न	,,
९४.	आर. सिम्पन	१०९	,,	,,	,,
९५.	ई. एन. चेपल	१५१	,,	,,	
९६.	आर. डब्ल्यू. काऊपा	१६५	,,	सिडनी	,,
९७.	जी. आर. डाउलिंग	१४३	न्यूजीलैण्ड	डनडिन	१९६८
९८.	जी. आर. डाउलिंग	२३९	,,	क्राइस्ट चर्च	,,
९९.	के. स्टेकफोल	१०३	आस्ट्रेलिया	बम्बई	१९६९
१००.	पी. सियन	११४	,,	कानपुर	,,
१०१.	ई. एन. चेपल	१३८	,,	नई दिल्ली	,,
१०२.	डी. वाल्टर	१०२	,,	मद्रास	,,
१०३.	आर. कन्हाई	१५८	वेस्ट इन्डीज	किंग्स्टन	१९७१
१०४.	सी. ए. डेविस	१२५	,,	जार्ज टाऊन	,,
१०५.	जी. एस. सोबर्स	१०८	,,	,,	,,
१०६.	जी. एस. सोबर्स	१७८	,,	ब्रिज टाऊन	,,
१०७.	सी. ए. डेविस	१०५	,,	पोर्ट आफ स्पेन	,,
१०८.	जी. एस. सोबर्स	१३२	,,	,,	,,
१०९.	आर. इलिंग्वर्थ	१०७	इंग्लैण्ड	मानचेस्टर	,,
११०.	बी. डब्ल्यू. लखहर्स्ट	१०१	,,	,,	,,
१११.	ए. आर. लुईस	१२५	,,	कानपुर	१९७२-७३
११२.	के. फ्लेचर	११३	,,	बम्बई	,,

शेष पृष्ठ ३७ पर

हाकी कैसे खेलें

(६) दोनों कलाइयों को इस प्रकार घुमाना, जिससे बाँह पर कोई प्रभाव न पड़े, केवल कलाई और हाथ घूमें। इससे कलाइयां मजबूत होती हैं, जिससे स्टिक की पकड़ और 'फ्लिक' अर्थात् झटके से गेंद 'हिट' करने की क्षमता बढ़ती है।

(७) सीधे खड़े रहकर पंजों के बल पर शरीर को साधना और इसी प्रकार एड़ियों पर शरीर के वजन को संभालना।

(८) दोनों हाथ कन्धों से ऊपर सिर को बीच में रखते हुए और फिर बगलों को फैलाना।

(९) बगलों में दोनों हाथ फैलाकर इस प्रकार खड़े होना कि दोनों पैरों के बीच डेढ़-दो फुट का अन्तर हो। फिर दाएं हाथ से दाएं पैर के अंगूठे को पकड़ना।

उक्त व्यायाम या ऐसे ही कुछ अन्य हल्के-फुल्के व्यायाम हैं, जिनसे शरीर की मांस-पेशियों को शक्ति और लचक मिलती है। साथ ही जरूरत से अधिक वजन बढ़ने पर नियंत्रण भी रहता है।

ये व्यायाम जहां दैनिक रूप से किये जाने चाहिए वहां खेल प्रारम्भ करने से पूर्व शरीर को गर्माने के लिए भी बहुत उपयोगी हैं।

शरीर को गर्माना इसलिए आवश्यक होता है, जिससे उसको तापमान को सहन करने योग्य बनाया जा सके, जो कि खेलते समय तेज दौड़ने-भागने के कारण उत्पन्न होता है। उस समय शरीर में रक्त-संचार भी तेजी से बढ़ता है। इसलिए आवश्यक है कि शरीर को उस स्थिति के योग्य बनाने के लिए पहले से ही तैयार कर लिया जाय।

शरीर गर्माने के लिए कितने पहले से ये क्रियाएं की जाएं, यह तो प्रत्येक खिलाड़ी की व्यक्तिगत शक्ति, शक्ति एवं गठन पर निर्भर करता है, किन्तु फिर भी एक सामान्य खिलाड़ी को इस पर लगभग बीस-तीस मिनट लगाना आवश्यक है।

शरीर में स्फूर्ति उत्पन्न करने, सांस को खेल के अनुरूप नियमित करने और मांस-पेशियों को खेलने तथा ढीला करने के लिए, खेल प्रारम्भ करने से पूर्व मैदान पर हल्के और तेज दौड़ना चाहिए। साथ ही ऊपर बताए गए व्यायामों में से कुछ के द्वारा अपने शरीर को गर्माना चाहिए।

शरीर गर्माने का एक लाभ यह भी होता है कि खिलाड़ी का मस्तिष्क और शरीर खेल के दौरान आने वाली क्रिया करने के लिए तैयार हो जाते हैं। जब ये दोनों— मस्तिष्क और शरीर के विभिन्न अंग—
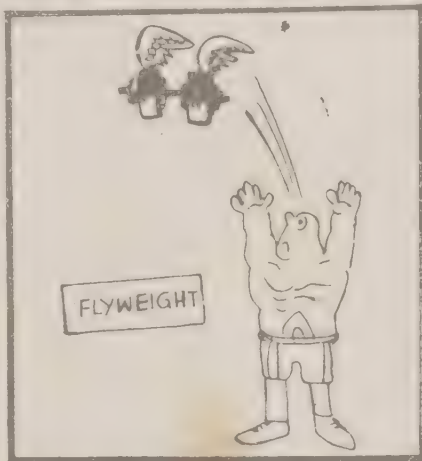
मनोवैज्ञानिक रूप से तत्पर रहते हैं, तो खेल की तकनीक, सूझबूझ और खेल-कौशल द्वारा खिलाड़ी सुगमता से मैदान पर अपने अच्छे खेल का प्रदर्शन कर सकता है।

अब जितना आवश्यक खेल प्रारम्भ करने से पूर्व शरीर गर्माना होता है, उतना ही आवश्यक खेल समाप्त होने के बाद शरीर को धीरे-धीरे सामान्य तापमान पर लाना भी आवश्यक है।

खेल के समय खिलाड़ी के मस्तिष्क में कोई चिन्ता, कोई खिचाव न हो। खिलाड़ी को खेलते समय चिन्तामुक्त और प्रफुल्लित रहना चाहिए। मन में एक दृढ़ निश्चय के साथ उसे मैदान पर उतरना चाहिए। खेलते समय शरीर एकदम ढीला 'रिलेक्स' रहना चाहिए। इस प्रकार कि शरीर के किसी भाग में तनाव न रहे। यदि कोई भी मांसपेशी सख्त करली जाय तो उसका प्रभाव सारे शरीर पर पड़ता है। ये सब मिलकर खिलाड़ी के खेल में गतिरोध उत्पन्न करते हैं।

शरीर को ढीला छोड़ने के लिए भी नियमित अभ्यास की आवश्यकता होती है, जो आगे चलकर एक आदत का रूप धारण कर लेती है।

खिलाड़ियों को सुझाव

हॉकी ऐसा खेल है, जिसमें भारतीयों की अनेक वर्षों से अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा कायम रही है और अब भी है। हाकी में हाथ-पैर दोनों के कौशल का पता चलता है। यह एक आकर्षक खेल भी है। हमारे देश के खिलाड़ी अपने अदभुत खेल-कौशल से संसार भर में प्रसिद्ध रहे हैं। इस कौशल को प्राप्त करने के लिए उन्होंने जिस अभ्यास और प्रशिक्षण की सतत् साधना की है, यह बहुत महत्वपूर्ण है, इसमें संदेह नहीं। इसी को दृष्टि में रखते हुए यहां खिलाड़ियों के लिये अनुभव के अनुसार कुछ उपयोगी सुझाव दिये जा रहे हैं—

व्यक्तिगत रूप से खिलाड़ी को स्वार्थी नहीं बनना चाहिए; क्योंकि यह एक का नहीं, ग्यारह खिलाड़ियों का खेल है।

अम्पायर की सीटी के अनुसार खेलिये और किसी अन्य संकेत से मार्ग-भ्रष्ट न होइये।

अपनी स्थिति पर बने रहिये। एक बार यदि आप अपनी स्थिति से हट गये तो संभलना बहुत कठिन होगा। याद रखिये कि गलती करने पर प्रतिकार करना खिलाड़ी भावना के विरुद्ध है।

निर्णायक के निर्णय कर प्रश्न नहीं करना चाहिए। शब्द या क्रिया द्वारा विरोध प्रगट करना दुर्व्यवहार माना गया है।

हाकी पर गेंद को ले लेना या उस पर उछालना नहीं चाहिए, क्योंकि इस आदत से खेल घातक हो जाता है।

खिलाड़ी को आफ साइड की स्थिति में नहीं रहना चाहिए। ऐसा करने से वह अपने पक्ष के लिये किसी बहुत अच्छे अवसर को खो देंगे।

गेंद को हिट करते हुए, रोकते हुए, धकेलते हुए, उठाते हुए या उसके पास पहुंचते हुए अपनी स्टिक का कोई भी हिस्सा, हत्थे सहित, कंधे से ऊपर नहीं जाना चाहिए।

(क्रमशः)

प्र० : हमारा शरीर गर्म क्यों रहता है ? तथा इसका तापमान एक सा कैसे रखा जाता है। मन्जूर हसन कादरी

उ० : शरीर को अपने कार्य करने के लिये ऊर्जा की आवश्यकता होती है। ये ऊर्जा दहन कार्य द्वारा प्राप्त की जाती है, इस दहन कार्य में हमारा खाया हुआ भोजन ईंधन का काम देता है।

शरीर के अन्दर इस दहन के परिणाम से कोई आग या तेज गर्मी उत्पन्न नहीं होती अपितु शरीर में उत्पन्न गर्मी धीमी तथा बिल्कुल नियन्त्रित होती है। शरीर के अन्दर के तत्व, ओक्सीजन को ईंधन से एक पूर्ण नियंत्रित रूप से मिलाने का कार्य करते हैं, और इसकी वजह से शरीर के अन्दर ९८.६ फॉरनहीट या ३७ डिग्री सेन्टीग्रेड की औसत गर्मी बनी रहती है। और शरीर इस गर्मी को हर समय बनाये रखता है। ये कार्य दिमाग के तापमान केन्द्र द्वारा किया जाता है इस तापमान केन्द्र में तीन भाग होते हैं पहला तापमान नियंत्रण करने का केन्द्र होता है ये केन्द्र शरीर के रक्त का तापमान नियंत्रित रखता है। दूसरे भाग द्वारा रक्त का तापमान घट जाने पर उसे बढ़ाया जाता है तथा तीसरा भाग रक्त का तापमान बढ़ने पर उसे घटाने में सहायता करता है।

जब रक्त का तापमान घट जाता है तो क्या होता है ? ऐसा होते ही मस्तिष्क द्वारा स्नायविक तंत्र के एक भाग को प्रेरित कर कार्य में लगा दिया जाता है, जिससे शरीर के अन्दर की कुछ ग्रंथियों किण्वक उत्पन्न कर मांसपेशियों तथा जिगर में उपचयन बढ़ा देती हैं और शरीर के अन्दर का ताप बढ़ जाता है। त्वचा की रक्त नाड़ियाँ सिकुड़ जाती हैं और प्रसारण द्वारा होने वाली गर्मी की हानि कम हो जाती है। त्वचा कि नन्ही नाड़ियां एक प्रकार का चिकना तत्व निकलाती हैं इससे भी शरीर की गर्मी कम नष्ट होती है।

इसी प्रकार रक्त का तापमान घटते ही दिमाग द्वारा शरीर में कंपकंपी उत्पन्न की जाती है इससे शरीर में गर्मी पैदा होती है।

रक्त का तापमान बढ़ने पर उसे ठंडा करने के केन्द्र कार्य आरम्भ कर देते हैं। इस के आदेश से त्वचा कि नाड़ियाँ खुल जाती हैं जिससे प्रसारण बढ़े तथा पसीना जल्दी सूखे।

पसीने द्वारा शरीर को बहुत जल्दी ठंडा किया जाता है क्योंकि जब कोई तरल पदार्थ गर्मी से सूखता है तो जिस स्थान पर वो होता है उसे वो ठंडा कर देता है।

प्र० : ग्रीनविच समय क्या होता है ? ठीक समय कैसे निश्चित किया जाता है ?

जगदीश कुमार—डिंगवाल, पंजाब

उ० : आजकल हमारे पास समय की दो मुख्य इकाइयां हैं, दिन तथा वर्ष। इन दोनों को ही पृथ्वी के घूमने से बताया जाता है। पृथ्वी का अपनी धुरी पर चक्कर लगाने से सौर-दिन बनता है। इसी प्रकार सूर्य के चारों ओर पृथ्वी का चक्कर पूरा होने पर सौर-वर्ष कहलाता है।

सौर-दिन को चौबीस घण्टों में बांटा जाता है। फिर हर घण्टे को ६० मिनट तथा हर मिनट को ६० सैकिण्डों में बांटा जाता है। वास्तव में दिन एक सी लम्बाई के नहीं होते, कभी दिन कुछ बड़ा तथा कभी कुछ छोटा होता है। परन्तु औसतन दिन को चौबीस घण्टे का ही माना जाता है। भिन्न स्थानों का सही समय निर्धारित करने के अभिप्राय से मनुष्य ने पृथ्वी पर याम्योत्तर रेखायें या ध्रुव से जाने वाली गोल रेखायें अंकित कर दी हैं। एक याम्योत्तर रेखा पर आने वाले सब स्थानों पर एक ही सौर-समय होता है। पूरब और पश्चिम की बढ़ने वाली याम्योत्तर रेखा पर आने वाले स्थानों के समय में अन्तर होता है। हर याम्योत्तर रेखा से दूसरी याम्योत्तर रेखा के समय में एक घण्टे का अन्तर होता है।

इसी प्रकार की एक याम्योत्तर रेखा इंग्लैंड में स्थित ग्रीनविच से होकर गुजरती है। इस रेखा को शून्य याम्योत्तर रेखा माना जाता है। इसे मुख्य याम्योत्तर रेखा या प्राइम मरिडियन भी कहते हैं। इस याम्योत्तर रेखा से ही समय गिना जाता है। समय निर्धारित करते समय दूसरी सब याम्योत्तर रेखाओं को, शून्य याम्योत्तर के पूरब या पश्चिम का नाम दिया जाता है।

संसार की सारी घड़ियों का समय ग्रीनविच के औसतन सौर समय से निश्चित होता है। ग्रीनविच के खगोलज्ञ वहाँ का समय सूरज या किसी विशेष तारे से मिलाते रहते हैं। समय सूरज या विशेष तारे के शून्य याम्योत्तर रेखा को पार करते समय मिलाया जाता है।

दूसरे देशों की वेधशालायें भी ठीक समय का ध्यान रखती हैं। जनता को इस ठीक समय का ज्ञान कराने के लिए रेडियो द्वारा सिगनल दिया जाता है। भारत में ठीक समय नैशनल फिसिकल लेबोरेट्री में निर्धारित किया जाता है तथा रेडियो में समय के सिगनल वहीं से प्रसारित किये जाते हैं। इस काम के लिये वेधशाला में विशेष घड़ियों का प्रयोग किया जाता है। इन घड़ियों में समय १/५०० सैकेण्ड हर दिन तक ठीक रक्खा जाता है।

प्र० : हाथ मिलाने की प्रथा कब और कैसे आरम्भ हुई थी ?

राजेश्वर कांत, चन्द्र मिश्र—गोरखपुर

उ० : किसी के आने अथवा मिलने पर अभिवादन करने के लिये अथवा किसी को विदा करते समय आजकल हाथ मिलाना बहुत ही स्वभाविक हो गया है, परन्तु ये भी बहुत से कार्यों के समान ही है जो हम बिना कुछ सोचे करते हैं परन्तु सम्भवत: पुराने समय में इस कार्य का कोई अर्थ अवश्य रहा होगा।

आदिकाल में हो सकता है हाथ को शक्ति का प्रतीक समझते होंगे। क्योंकि हर कार्य जैसे शत्रु का मुकाबला करने, जानवरों को मारने, भाले, खंजर तथा अन्य वस्तुएं बनाने में हाथ ही से कार्य किया जाता था। इसलिए जब खाली हाथ किसी की ओर बढ़ाया जाता था तो इसे मित्रता का प्रतीक समझते थे क्योंकि हाथ में हथियार इत्यादि न होने पर ये साफ पता चल जाता था कि हाथ बढ़ाने वाला किसी प्रकार की लड़ाई नहीं करना चाहता।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

होली का पैकर सीरीज

जी हां, हमें पता लगा है कि आस्ट्रेलिया का कैरी पैकर भारत में होली का अपना पैकर होली चलाने की सोच रहा है। पैकर होली में आम लोग खेलना चाहें तो सबको परमिट बनवाना पड़ेगा। पैकर का ख्याल है कि पैकर होली, पैकर क्रिकेट से भी ज्यादा लोकप्रिय होगी। आप कहेंगे कि प्रचलित होली के होते हुए लोग पैकर होली में क्यों भर्ती होंगे? जनाब आप गलती पर हैं। पैकर को वह हथकंडे आते हैं, एक जमाना वह आयेगा कि पैकर होली खेलने के लिये महीनों पहले बुकिंग शुरु हो जायेगी। पैकर होली में कई आकर्षण होंगे जो पारम्परिक होली में नहीं हैं। आप को हम पैकर होली की झलक दिखाते हैं। आपको सब समझ आ जायेगा।
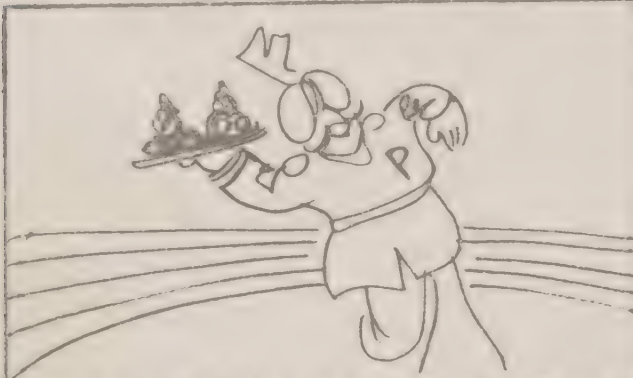
पैकर होली टोली में पैकर के बैयरे बीच-बीच में भंग के पकोड़ों की प्लेंटे सर्व करेंगे।

पैकर होली में कुआंरे क्रिकेटर व फिल्मी स्टारों से होली खेलने के लिये युवतियों को विशेष टिकट लेना पड़ेगा, जिसकी दर फिल्मों के प्रीमियर शो के टिकट के बराबर होगी।

पैकर होली का सबसे बड़ा आकर्षण होगा। तीस हजार डालर का मटका जो मैदान के बीच में खम्भे के सहारे तीस फुट ऊंचा लटक रहा होगा। होली खेलने वालों की टुकड़ियां पिरामिड बनाकर बारी-बारी इसे हथियाने की कोशिश करेंगी। जो झटक ले उसी टोली को यह विशाल पुरस्कार प्राप्त होगा। मटके में ३०,००० डॉलर का चैक होगा। आपने देखा पैकर कैसे-कैसे सुनहरे जाल बिछाने वाला है?
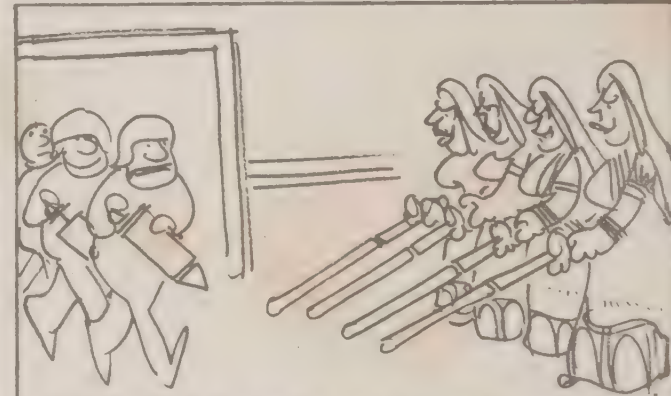
बरसाने की होली सब जानते हैं. वहां रंग फेंकने आये लोगों पर बरसाने की औरतें लट्ठ बरसाती हैं। पैकर अपनी होली सीरीज के लिये बरसाने की सुन्दर लड़कियां भरती करेगा। होली मैदान के प्रवेश द्वार पर ये लड़कियां फाइबर ग्लास के डंडे लिए खड़ी रहेंगी। उन की पोशाकें पैकर टेलर्स द्वारा सिली होंगी। बाद में पैकर बिकिनी भी ट्राई करेगा। जो होली मैदान में आये वह पहले इनके डंडे खाये। लोग शायद मैदान में हैलमेट पहनकर आयें जैसे पैकर सीरिज के बेटसमैन हैलमेट पहनकर बैटिंग करते हैं। अभी तो शुरू है, आगे-आगे देखिये होता है क्या।

पेंकर क्रिकेट रात को होता है। पेंकर होली भी रात को होगी। यह एक नया आकर्षण होगा। पेंकर होली टोली के साथ गैस के हंडे लिये पेंकर बॉयज चलेंगे, जैसे शादियों पर चलते हैं।

होली टोलियों में भजन गाती मंडलियां भी होती हैं। पेंकर अपनी होली में भी कुछ मंडलियां भर्ती कर लेगा और भजनों की ऐसी ट्यूनें बनवायेगा कि उन पर होली टोलियां ट्विस्ट, रॉक और चा चा चा कर सकें।

पेंकर होली में आकर्षण पैदा करने के लिये शायद पेंकर रंग के गुब्बारे फेंकने के लिए लिलि, थामसन, राबर्टस, होल्डिंग, रॉक्स व इमरान को ले आये।

होली के अंत में जिस होली हुल्लड़ बाज ने सबसे ज्यादा हुल्लड़ किया हो उसे पेंकर अधिकारी की पत्नी मेन ऑफ दि होली की ट्राफी प्रदान करेगी जैसे क्रिकेट मैचों में 'मेन ऑफ दि मैच' पुरस्कार दिया जाता है।

होली टोली क्रिकेट ग्राउंड में इकट्ठी होगी। पिच के स्थान पर पानी का पूल बना होगा, पूल में रंग वाला पानी। पूल के किनारे पेंकर सीरीज में भर्ती लड़कियां खड़ी होंगी। लोग विशेष टिकट लेकर इन लड़कियों को धक्का देकर पानी में गिरा सकेंगे।

पेंकर होली में भारत के क्रिकेटर होली खेलेंगे। भारतीय क्रिकेटरों को पेंकर ने अपने सीरीज के क्रिकेट लायक तो समझा नहीं, कम से कम होली लायक तो समझेगा ही। पेंकर होली में बम्बई के फ्लाप हीरो-हीरोइनों को भी भर्ती किया जायेगा। अब आप बताइये कि फिल्मी और क्रिकेट स्टारों से होली खेलने स्टार प्रेमी भारतवासी क्यों नहीं टूटेंगे?

कन्हैयालाल कपूर

जुलूस अब मरघट बाजार में से गुजर रहा था। एकाएक जुलूस के नेता को, जिसकी लम्बी दाढ़ी देखकर यह भ्रम होता था, जैसे यह दाढ़ी नहीं झाड़न है—विचार आया कि जुलूस आवश्यकता से अधिक मौन है। अतएव उसने पूरी शक्ति से चिल्लाकर कहा, 'धृष्टता-आन्दोलन!' जुलूस ने एक साथ नारा लगाया :

'जिन्दाबाद।'
'शील-संकोच!'
'मुर्दाबाद।'
'हम क्या चाहते हैं?'
'उपद्रव।'

नेता को विश्वास हो गया कि जुलूस में जीवन के काफी लक्षण हैं—और जुलूस बाजार में से गुजरता हुआ गिरगिट रोड की ओर बढ़ने लगा।

मातादीन इस जुलूस का घृणा रोड से पीछा कर रहा था। उसके कपड़े गन्दे, बाल बढ़े हुए और नजरें भूखी थीं। पचासवीं बार उसने अपने खुश्क होंठों पर जबान फेरते हुए अपने दायें-बायें चलने वाले व्यक्तियों की जेबों की ओर देखा—और पचासवीं ही बार उसे निराशा हुई। वह मन ही मन में हैरान हो रहा था कि किसी भी व्यक्ति की जेब में फूटी कौड़ी तक न थी। फूटी कौड़ी तो खैर बहुत बड़ी बात थी, यहां तो ऐसे लोग भी थे जिनके बदन पर फटी हुई कमीज तक नहीं थी। मातादीन को इन लोगों पर अत्यन्त गुस्सा आया और उसने होंठों ही होंठों में उन्हें दो-एक मोटी-मोटी गालियां दीं। उसका जी चाहा कि जुलूस के नेता की लम्बी दाढ़ी पकड़कर उससे कहे कि 'धृष्टता आन्दोलन! बहुत खूब!! लेकिन यह कहां की धृष्टता है कि किसी व्यक्ति की जेब में इतने पैसे भी नहीं हैं कि एक भूखा जेबकतरा जेब काटकर खाना खा सके।'

आज मातादीन का तीसरा फाका था। भूख के मारे वह निढाल हो रहा था। उसका दिमाग चकरा रहा था और हर कदम पर उसे ऐसा लगता था जैसे अभी लड़खड़ाकर जमीन पर आ रहेगा—लेकिन इतने बड़े जुलूस में लड़खड़ाना भी तो मुश्किल था। उसके आगे-पीछे, दायें-बायें इतनी भीड़ थी कि यदि वह गिरना चाहता तो भी शायद न गिर पाता। एकाएक जुलूस एक चौराहे में रुक गया। आगे ट्रैफिक का रश था। लोग आपस में तरह-तरह की चेमिगोइयां करने लगे। किसी ने कहा, 'संसद भवन अब निकट ही है।' कोई बोला, 'आज पुलिस बाधा नहीं डाल रही।' मातादीन ने अपने बाईं ओर खड़े व्यक्ति की जेब की तरफ ललचाई हुई नजरों से देखा। बारीक मलमल में से उसे दो-एक सिक्के झांकते नजर आए। उसके खुश्क होंठों पर मुस्कराहट की हल्की-सी लहर दौड़ गई। वह उस व्यक्ति के और निकट सरककर उचित अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। एकाध बार उस व्यक्ति की आंख बचाकर अपना हाथ उसकी जेब की ओर बढ़ाने की कोशिश की, लेकिन उसे जेब काटने का साहस न हुआ। दो-चार मिनट तक वह असमंजस में पड़ा रहा। आखिर उसने हिम्मत से काम लेकर एक बार और कोशिश करने का निश्चय किया। उसने धीरे से अपना हाथ उस व्यक्ति के कंधे पर रखते हुए कहा, 'क्यों जी! यह जुलूस अब चलेगा भी या नहीं?' और इससे पूर्व कि वह व्यक्ति उसे कोई उत्तर देता, किसीने पीछे से आकर उसकी पीठ पर दोहत्तड़ मारते हुए कहा, 'अरे मेरे बन्द! तू यहां क्या कर रहा है?'

मातादीन ने मुड़कर देखा। यह आवाज उसके सहव्यवसायी कल्लू शेख की थी। मातादीन ने उसे आंख मारते हुए चुप रहने का संकेत किया। लेकिन कल्लू शेख चुप रहने वाला आसामी नहीं था। उसने मातादीन का हाथ दबाते हुए धीरे से उसके कान में कहा, 'देख बेटा! यह बात ठीक नहीं। जुलूस मेरी जाति के लोगों का है। तुम यहां...'

मातादीन ने उसकी बात काटते हुए धीमे स्वर में कहा, 'नाराज मत हो यार! आधा हिस्सा तुम्हारा रहा।'

नियम के विरुद्ध कल्लू शेख ने जीवन में पहली बार अपने सहव्यवसायी की बात मान ली। जुलूस के नेता ने एक बार फिर जोरदार नारा लगाया और जुलूस संसद भवन की ओर रवाना हुआ। कल्लू शेख और मातादीन साथ-साथ चलने लगे।

संसद भवन पहुंचने से पहले जुलूस को एक तंग गली से गुजरना था जिसके बाहर पुलिस ने जुलूस को रोकने का पूरा प्रबन्ध कर रखा था—जैसे ही जुलूस उस गली के अन्तिम छोर पर पहुंचा, एक मजिस्ट्रेट ने, जो घोड़े पर सवार था, उसे तितर-बितर हो जाने का हुक्म दिया। जनसमूह ने अपने नेता की ओर देखा। नेता ने मजिस्ट्रेट के हुक्म की परवाह न करते हुए एक के बाद एक चार-पांच नारे लगवाने के बाद जुलूस को आगे बढ़ने के लिए कहा। मजिस्ट्रेट ने अन्तिम चेतावनी दी लेकिन जुलूस पर उसका कुछ भी प्रभाव न हुआ। आखिर जब जुलूस ने पुलिस पर पथराव करना शुरू कर दिया तो मजिस्ट्रेट ने पुलिस को लाठी चार्ज करने का आदेश दिया। अब जुलूस में भगदड़ मच गई। बहुत-से लोग उल्टे पांव तंग गली की ओर दौड़े। लेकिन गली तंग थी और जनसमूह असीम। इस भगदड़ में कई बूढ़े और बच्चे रौंदे गए। दर्जनों व्यक्तियों को चोटें आईं। मातादीन ने भागते समय पटखनी खाई और भूमि पर आ रहा। पुलिस अब गली में आ पहुंची थी और लोग बड़ी घबराहट की स्थिति में भाग रहे थे। लोगों का एक रेला मातादीन के ऊपर से गुजरता हुआ गली में स्थित एक मस्जिद में आ घुसा। इतने में पुलिस अधिकारी ने सीटी बजाई। कुछ लोग संसद भवन में घुसने में सफल हो गए थे; उन्हें गिरफ्तार करना था। पुलिस के सिपाही सीटी की आवाज सुनकर तंग गली से बाहर की ओर दौड़े।

पुलिस के चले जाने के बाद जब लोगों के होश कुछ ठिकाने हुए तो उन्होंने अपने इर्द-गिर्द एक नजर डाली। कुछ भयभीत बच्चे भूमि पर पड़े थे, उन्हें उठाकर अपने-अपने घरों को जाने के लिए कहा गया। कुछ बूढ़े घायल हो गए थे, उनकी मरहम-पट्टी की गई। मातादीन को बेहोशी की हालत में उठाकर मस्जिद में लाया गया। उसके मुंह पर ठण्डे पानी के छींटे मारे गए।

शेष पृष्ठ ३६ पर

बन्द करो बकवास

ऐ दिले आवारा चल फिर वहीं दोबारा चल।
बन्द करो बकवास. तुम 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' सात बार देख चुके हो। एक बार और नहीं देखने दूंगा।

क्या हुआ तेरा वायदा. वो कसम, वो इरादा।
RAJA TAILORS
बन्द करो बकवास, मैंने कह तो दिया 'देर हो गई माफ कर दो' तुम ऐसा करोगी तो मेरी बीबी क्या समझेगी ?

कभी-कभी मेरे दिल में ख्याल आता है ..
बन्द करो बकवास. अगर ऐसे ख्याल आने लगे तो तुम्हारा 'दीवाना' पढ़ना बन्द कर दूंगी।

पृष्ठ ३४ का शेष
उसे झंझोड़-झंझोड़कर होश में आने के लिए कहा गया। लेकिन मातादीन पूर्ववत् अचेष्ट पड़ा रहा। एकाएक किसी को खयाल आया कि उसकी नब्ज टटोली जाए। उसने मातादीन की नब्ज पर हाथ रखा और आश्चर्य और शोक के मिले-जुले स्वर में कहा—'अरे यार! यह तो खत्म हो गया!'

एक पनवाड़ी ने दांत निकालते हुए कहा—'जभी तो मैं सोचूं कि यह उठे क्यों नहीं।'

मातादीन के देहान्त का समाचार तुरन्त 'धृष्टता-आन्दोलन' के कार्यालय में पहुंचाया गया। देखते-देखते मस्जिद में हजारों लोगों का जमघटा हो गया। आन्दोलन के बड़े-बड़े नेता अपनी-अपनी मोटरों द्वारा मस्जिद में पहुंच गए। लोग एक-दूसरे से पूछने लगे, 'यह कौन आदमी था? कहाँ का रहने वाला था? क्या वह आन्दोलन का नियमित सदस्य था? हमदर्द था, हामी था?'

धृष्टता-आन्दोलन के किसी भी सदस्य को उसका अता-पता मालूम नहीं था। वे केवल इतना जानते थे कि उसका नाम मातादीन है—क्योंकि यह नाम उसके बाजू पर लिखा हुआ पढ़ा गया था। लेकिन उन्होंने बहुमत से मातादीन को 'शहीद' की उपाधि दी और घोषणा की कि उसका जनाजा बड़ी धूमधाम से निकाला जाए। आन्दोलन के समाचार-पत्रों को निर्देश भेजे गये कि इस शहादत का उल्लेख विशिष्ठ रूप से किया जाये। समाचार-पत्रों ने धड़ाधड़ परिशिष्ट निकाले जिनमें मरने वाले की राष्ट्रीय सेवाओं का उल्लेख करते हुए 'धृष्टता-आन्दोलन' के प्रथम शहीद के प्रति श्रद्धा व्यक्त की गई।

'शैतान' नामक पत्र ने लिखा: 'शहीद मातादीन धृष्टता-आन्दोलन के जनकों में से थे। आप एक अत्यन्त उच्च घराने के व्यक्ति थे। राष्ट्र-सेवा की भावना आपको पैतृक सम्पत्ति के रूप में मिली थी। आपके दादा भी धृष्टता-आन्दोलन के बहुत बड़े स्तम्भ थे। शहीद की शहादत से आन्दोलन को ऐसी क्षति पहुंची है कि जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती।'

'घृणा' नामक पत्र ने लिखा: 'हमें शहीद के सहयोगी होने का गौरव प्राप्त था। आप अत्यन्त सभ्य तथा शिष्ट प्रकृति के बुद्धिजीवी थे। यदि उन्हें देवतास्वरूप कहा जाए तो अधिक उचित होगा। आपने

अपना जीवन मानव-सेवा के लिए समर्पित कर रखा था। आपके देहान्त से हमें व्यक्तिगत आघात पहुंचा है।'

स्वर्गीय मातादीन के जुलूस में लगभग एक लाख व्यक्ति सम्मिलित हुए—और कब्रिस्तान तक वातावरण 'शहीद मातादीन! जिन्दाबाद! धृष्टता-आन्दोलन! जिन्दाबाद के नारों से गूंजता रहा। स्वर्गीय को दफनाने के बाद एक शोक-सभा की गई जिसमें भाषण देते हुए धृष्टता-आन्दोन के प्रधान ने कहा:

मित्रों!

हम यहां एक बहुत बड़े शहीद को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने के लिए एकत्र हुए हैं। शहीद मातादीन ने अपनी अद्वितीय शहादत से सिद्ध कर दिया है कि धृष्टता-आन्दोलन में कैसे-कैसे सरफरोश मौजूद हैं जो समय आने पर निःसंकोच अपने जीवन की आहुति दे डालते हैं, लेकिन आन्दोलन का झण्डा झुकने नहीं देते। (तालियां) शहीद पुलिस के अमानवी लाठी चार्ज के शिकार हुए। (शेम-शेम) उन्हें छाती पर और सिर पर छः गहरे घाव आए। उनकी जान बचाने का हर सम्भव प्रयत्न किया गया लेकिन अफसोस उन्हें बचाया न जा सका। शहीद आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनके बलिदान की स्मृति सदैव हमारे हृदय में बनी रहेगी। जिस कर्मनिष्ठता से उन्होंने धृष्टता-आन्दोलन की सेवा की है, वह आप सबपर प्रकट है। बल्कि मैं तो यह कहूंगा कि उन्होंने अपने लहू से हमारे आन्दोलन को सींचा है। (तालियां) शहीद के सम्मुख सदैव एक ही उद्देश्य रहा—कि अपने सहजातियों की अधिक से अधिक सेवा की जाए और जहां तक सम्भव हो, इस पिछड़ी हुई जाति का दामन मोतियों से भर दिया जाए। (तालियाँ)।

उपस्थित जनों ने जोश से बेकाबू होकर 'शहीद मातादीन: जिन्दाबाद' के नारे लगाए और प्रधान का शेष भाषण उस शोर-गुल में दबकर रह गया।

दूर एक कोने में कल्लू शेख ने एक व्यक्ति की जेब काटते हुए, होंठों ही होंठों में मुस्कराकर कहा—"...शहीद कहीं का?"

मदहोश
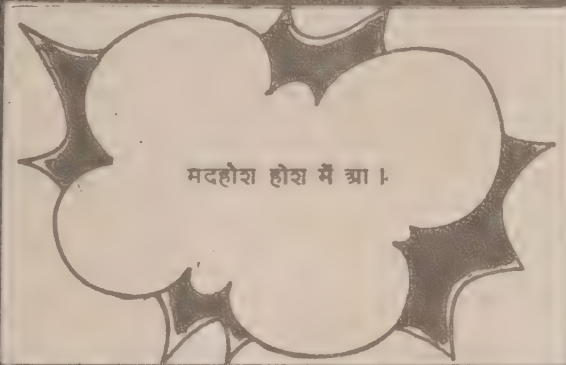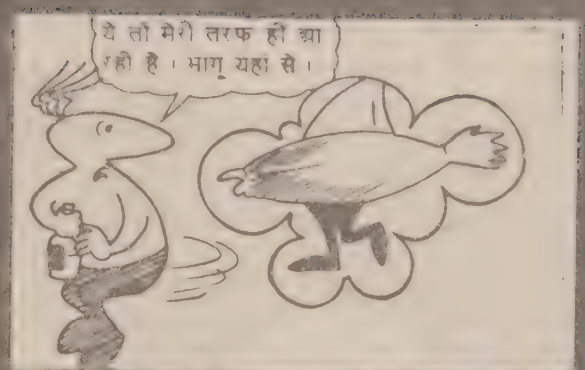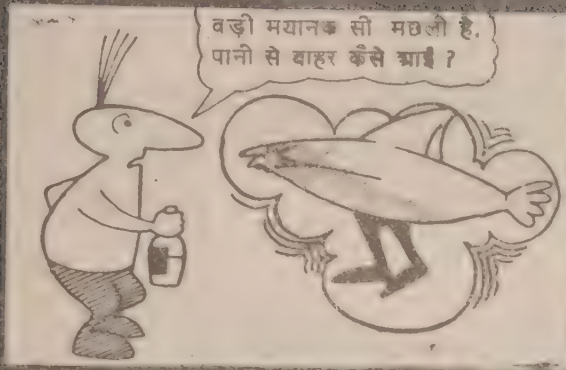
११३.	टी. डब्ल्यू. ग्रेग	१४८	इंग्लैण्ड	बम्बई	१९७२-७३
११४.	के. फ्लेचर	१२३	,,	मानचेस्टर	१९७४
११५.	जे. एड्रिच	१००	,,	,,	,,
११६.	डी. ऐमिस	१८८	,,	लॉर्ड्ज	,,
११७.	टी. डब्ल्यू ग्रेग	१०६	,,	,,	,,
११८.	डी. लॉयड	२१४	,,	एडबेस्टन	,,
११९.	एम. डेनिस	१००	,,	,	,,
१२०.	ए. कालीचरन	१२४	वैस्ट इन्डीज	बंगलौर	१९७४-७५
१२१.	जी. ग्रीनिज	१०७	,,	,,	,,
१२२.	सी. लॉयड	१६३	,,	,,	,,
१२३.	वी. रिचर्ड्स	१९२	,,	नई दिल्ली	,,
१२४.	आर. फ्रेडरिक्स	१००	,,	कलकत्ता	,,
१२५.	आर. फ्रेडरिक्स	१०४	,,	बम्बई	,,
१२६.	सी. लॉयड	२४२	,,	,,	,,
१२७.	जी. टर्नर	११७	न्यूजीलैण्ड	क्राइस्टचर्च	१९७६
१२८.	वी. रिचर्ड्स	१४२	वैस्ट इन्डीज	ब्रिजटाऊन	,,
१२९.	सी. लॉयड	१०२	,,	,,	,,
१३०.	वी. रिचर्ड्स	१३०	,,	पोर्ट आफ स्पेन	,,
१३१.	वी. रिचर्ड्स	१७७	,,	,,	,,
१३२.	ए. कालीचरन	१०३	,,	,,	,,
१३३.	जे. पारकर	१०४	न्यूजीलैण्ड	बम्बई	१९७६-७७
१३४.	जी. टर्नर	११३	,,	कानपुर	,,
१३५.	आर. सिम्पन	१७६	आस्ट्रेलिया	पर्थ	१९७७-७८
१३६.	टोनीमैन	१०५	,,	,,	,,
१३७.	जी. ऐलोफ	१२१	,,	एडेलिड	,,
१३८.	आर. सिम्पन	१००	,,	,,	,,
१३९.	जहीर अब्बास	१७६	पाकिस्तान	फैसलाबाद	१९७८
१४०.	जावेद मियांदाद	१५४	,,	,,	,,
१४१.	असोफ इकबाल	१०४	,,	,,	
१४२.	जहीर अब्बास	२३५	,,	लाहौर	
१४३.	जावेद मियांदाद	१००	पाकिस्तान	कराची	१९७८
१४४.	ए. कालीचरन	१८७	वैस्ट इण्डीज	बम्बई	१९७८-७९
१४५.	बेमिल विलियमस	१११	,,	कलकत्ता	,,

परिणाम

अंक नम्बर ४ में प्रकाशित पहचानिये प्रतियोगिता का हल फिल्म का नाम: "रूप तेरा मस्ताना"
विजेता: अनिल कुमार गुप्ता — ग्वालियर
(निर्णय लाटरी द्वारा)

अंक नम्बर ५ में प्रकाशित प्रतियोगिताओं के परिणाम

वर्ग पहेली का हल

ह	ड्डी	प	स	ली
की		ल	च	क
क	म		मु	
त	क	ता	च	ल
	ई	ला		ड़ी

विजेता : अशीम कोहली
नई दिल्ली
(निर्णय लाटरी द्वारा)

मंत्री पुत्र प्रतियोगिता
सुझाव : मंत्रियों को शादी नही करनी चाहिये।
विजेता : हामिद अली खां
शाहजहांपुर (उ०प्र०)

ये है स्वस्तिक का निशान
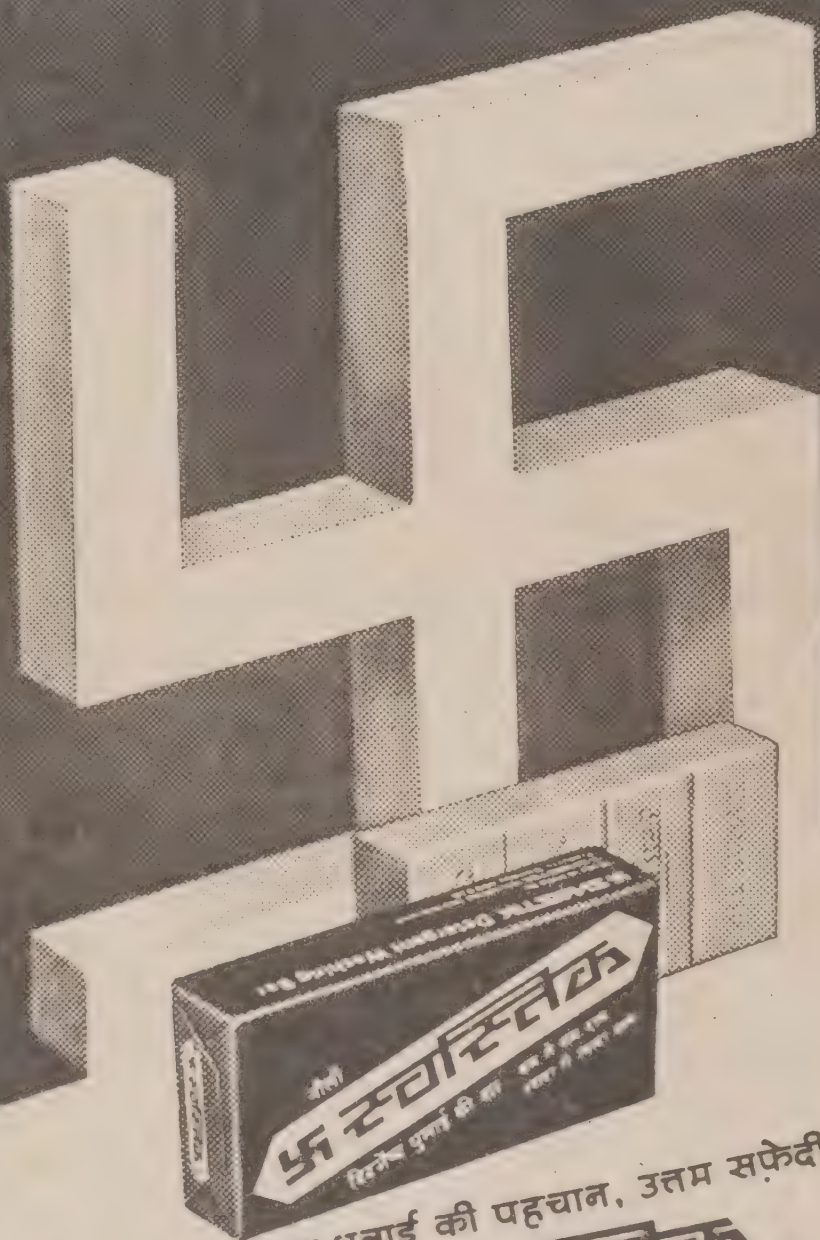
यानी उत्तमता की पहचान, उत्तम धुलाई की पहचान, उत्तम सफ़ेदी की पहचान

नयी! नीली स्वस्तिक
डिटर्जेण्ट धुलाई की बार

जो करे कम से कम दाम में
ज़्यादा से ज़्यादा काम

दाम : सिर्फ़ रु. १.२२
(स्थानीय कर अतिरिक्त।)

Shilpi-dm-5/79 Hin

दीवाने कार्ड को मोड़कर देखिये
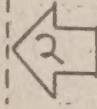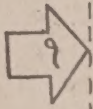
पहले बीच से मोड़िये फिर नं० २ की लाइन को १ नं ० की लाइन से मिलाइय।

अंतर्राष्ट्रीय बाल वर्ष १९७९

बाल शिशु मन्दिर

बाल पुस्तकालय

गरीब बच्चों के लिये पौष्टिक आहार की व्यवस्था

गरीब बच्चों के लिये शिक्षा

नाबालिग बच्चों से मेहनत मजदूरी कराने के विरुद्ध कार्यवाही

१९७९ का वर्ष अंतर्राष्ट्रीय बाल दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। भारत में गरीब, निराश्रित, मूर्ख, अपंग, शिक्षा से दूर, बीमार तथा मजदूरी पर लगे बच्चों की संख्या लाखों करोड़ों में है। क्या अंतर्राष्ट्रीय बाल वर्ष उन्हें उनके अधिकार दिला सकेगा ? क्या उनके अभावों को दूर कर सकेगा ? उनके जीवन में प्यार और आशा की किरण जगा सकेगा ? सरकार ऐसे बच्चों की भलाई के लिये अंतर्राष्ट्रीय बाल वर्ष में लागू करने के लिये अनेक योजनायें बना रही हैं। राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर काफी बड़ी धनराशि इस कार्य के लिये मंजूर की जा रही है। क्या नेता लोग सामाजिक संस्थायें तथा सरकारी नौकर इस राशि का सही उपयोग कर पायेंगे ? उनके हाथों इस पैसे का क्या उपयोग होगा वह जानने के लिये पृष्ठ मोड़ कर देखिये।
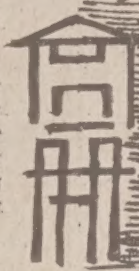
दूसरा
अभी
नहीं

माता पिता
के लिए
नेक सलाह

तीसरा
कभी
नहीं

अपने पास के परिवार नियोजन केन्द्र,
प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र या ग्राम स्वास्थ्य सहायक
से सलाह और सामान लीजिए
आज ही उनके पास जाइए

18/498

...न्द भंडारी द्वारा पीतम- ... ३४१७, आर्यपुरा, सब्जी ... दिल्ली, १६ वर्ष, ...मित्रता करना और पत्रि- ... पढ़ना।

पार्थ प्रतीम दत्तो गुप्ता, बना-रस रोड, अम्बिकापुर, सरगुजा (म० प्र०), १५ वर्ष, लिखना, पत्र-मित्रता, पागलों जैसी हरकतें करना।

स० निर्मल सिंह द्वारा महेन्द्र-पाल सिंह, जनरल स्टोर, शाहजहांपुर, पत्र-मित्रता करना तथा फोटो खींचना, क्रिकेट खेलना।

अमरेश शंकर द्वारा डाक्टर आर० एस० पी० शर्मा, सदर अस्पताल, धनबाद, १७ वर्ष, कार्टून बनाना, कहानियां लिखना।

दीनदयाल चौधरी, आठमी मंजिल शांतिपुर, गौहाटी, आसाम, २२ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, बाजा बजाना सीखना और गाना।

राजाप्रकाश गाड़े, ब्लाक-१३/डी०, सड़क ए० बी०-डी० सेक्टर-६ भिलाई नगर, १८ वर्ष, हंसना-हंसाना पत्र-मित्रता करना।

गोविन्द प्रसाद रणधीर, बुध-मल जी, २६ वर्ष, नावल पढ़ना, सिनेमा देखना, पत्र-मित्रता करना, सैर करना मोटर चलाना।

...र खां, ६ तकि डिह ... रोड, १८ वर्ष, दोस्तों ... साफ दिल से मिलना, ... सारे मंगजीन पढ़ना, ...ाना।

महेश 'मासूम' ६/१२ ब्लाक नम्बर १, गोविन्द नगर, कानपुर, १६ वर्ष, तस्वीरें जमा करना पत्र-मित्रता, ठंडी आहें भरना।

मु० आदिल अख्तर, ७४/४५ सूफी टोला पुराना शहर, बरेली, २० वर्ष, वेटलिफ्टिंग करना, कबूतरबाजी करना, फिल्में देखना।

कृष्ण अग्रवाल, १/१०८४१, गली नम्बर ४, सुभाष पार्क, नवीन शाहदरा, १८ वर्ष, क्रिकेट खेलना, दोस्ती करना, पढ़ना और सैर करना।

फहीम अजीज, ११५, शाह-मारूफ, गोरखपुर (उ० प्र०), १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, पत्रों का जवाब शीघ्र देना, हंसना-हंसाना।

अमर चार मोदक द्वारा बोम्बे रेडियो एण्ड टाइम मेन रोड, जालाधनबाद, १६ वर्ष, कलाकार बनना, तैरना, मोटर साईकिल चलाना।

अरविन्द गुप्ता, २६४ आर० एम० टी० करनाल, १२ वर्ष, टिकट संग्रह करना, नयी दोस्ती करना, बच्चों के साथ खेलना।

...मित्तल, पुत्र प्रधाना- ... कीय कन्या जूनियर ...कूल हापुड़, १२ वर्ष, ...खेलना, बच्चों पर ...ाना।

मो० इमरान पुत्र श्री दुल्हा खान, सराय गुलजारीमल लाल मस्जिद रोड, मुरादाबाद, १७ वर्ष, क्रिकेट खेलना, बहस करना।

अशोक कुमार, १२३/४६३ चार खम्भा कुआं कालपी रोड, कानपुर, १६ वर्ष, फास्ट ड्राइविंग करना, नए-नए मित्र बनाना।

बी० आर० ओझी, अलका रेडियो श्रोता संघ थाना चक, भवदेपुर सीतामढ़ी, १७ वर्ष, कालिज के साथियों को उल्टा सीधा पढ़ाना।

अजय कुमार बंसल द्वारा बंसल मैडीकल स्टोर जहांगीराबाद, बुलन्दशहर (उ० प्र०), १७ वर्ष, स्कूल की किताब पढ़ना।

महेश कुमार खारीवाल 'बाबा' पी० सी० खारीवाल, नेशनल इन्श्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड संवरिया (राज०), १७ वर्ष, मित्रता करना।

आलोक कुमार सक्सेना द्वारा डा० संतोष भाटिया, प्लाट नम्बर ३८ चांद पोल बाजार, १७ वर्ष, हास्यप्रद बातें पढ़ना क्रिकेट खेलना।

...न कृष्णाजी 'रोमी' ... कुटीर नई आबादी ... (राज०), १६ वर्ष, ...बच्चों को प्यार करना ...-मित्रता।

राजेश कुमार भारद्वाज, ७२ बिलरीपुर कपूर गली, बरेली (यू० पी०), १८ वर्ष, कप्तानी करना, पत्रिकायें पढ़ना और घूमना।

बलदेव राज सचदेव, १३६, रिफ्यूजी कालोनी, पो० एग्रीको जमशेदपुर, २० वर्ष, मार-पीट में हिस्सा लेना, दादागीरी दिखाना।

मोहनलाल साहू, डी/बी ७६५ जमशेदपुर, १७ वर्ष, क्रिकेट खेलना, बड़ों का आदर करना, झूठ कम बोलना, खुश रहना, मेहनत करना।

किशोर कुमार, ३३६६, बाजार सीताराम दिल्ली, २२ वर्ष, अच्छा आदमी बनना, दूसरों की सहायता करना, पुस्तक पढ़ना।

नीरज बरनावाल द्वारा श्रीमती साका बरनावाल श्री एम० एस० मिशन कम्पाउंड, १४ वर्ष, क्रिकेट-बैडमिंटन खेलना, पढ़ना।

विजय कुमार अग्रवाल ३/१५३ प्रभु नगर मण्डी, सोनीपत, १६ वर्ष, लिखना-पढ़ना रेडियो सुनना, पत्र-मित्रता करना, फिल्म देखना।

...कुमार शर्मा, ७४ ...री मेरठ (यू० पी०), ...वर्ष, मारपीट करना, ...की मदद करना, सुबह ...लना।

रवीन्द्र शर्मा 'अपूर्ण' ८६ चांदमारी दार्जीलिंग, १८ वर्ष, सबसे प्यार करना, पत्र-मित्रता करना, मोटर कार चलाना।

लक्ष्मीचन्द, किशनचन्द लालचन्द ऋषि कालोनी बिलासपुर (म० प्र०), १७ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, टी० वी० पर प्रोग्राम सुनना।

वकार अहमद, न्यू लाइट स्टूडियो ला० ब० शा० मुगल सराय, दिल्ली, १८ वर्ष, फोटोग्राफी करना, चश्मा बनाना।

अशोक कुमार बधवा, क्वार्टर नम्बर vi-७ कैनाल कालोनी श्री गंगानगर, २३ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, पढ़ना, मजाक करना।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपनी फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब
८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ______

पता ______

आयु ______ शौक ______

...६, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

१५ मार्च से २१ मार्च ७८ तक

मेष : १५ मार्च से लाभ बढ़े, भाग्य सहारा देता रहे, शत्रु पराजित, कारोबार ठीक चले, यात्रा अचानक और सफल रहे, १७ मार्च से १९ मार्च तक राजकीय कामों में परेशानी होगी।

वृष : १५ मार्च से व्यापार में सुधार, प्रयत्न करने पर कार्य सिद्ध हों, दौड़धूप अधिक, शत्रु पैदा होकर नष्ट होंगे, १७ मार्च से १९ मार्च तक स्वास्थ्य नरम, घरेलू समस्याएं बढ़ेंगी।

मिथुन : १५ तारीख से हालात सुधरेंगे, परन्तु मन व्यर्थ में बेचैन रहेगा, कारोबार से लाभ, मित्र सहयोग देंगे, अभीष्ट कार्य बन जायेंगे, १७ मार्च से नई वस्तुओं की खरीद, व्यय बढ़ेगा।

कर्क : १७ मार्च तक बनते कामों में बाधा, भाई की पीड़ा या परेशानी, मित्रों से मत-भेद, अचानक वैर-विरोध से काम बिगड़ेंगे, यात्रा छोड़ दें, १७ फरवरी रात्रि से १९ मार्च तक समय अनुकूल रहेगा।

सिंह : १५ मार्च से हालात में सुधार, शुभ कार्यों पर खर्च, रोजगार एवं धन सम्बन्धी चिन्ता मिटेगी, यात्रा में सुख, १७ मार्च से अधिक परिश्रम से सेहत कमजोर, शत्रु रुकावटें पैदा करेंगे।

कन्या : १७ मार्च तक विरोधीपक्ष से बचें, नए एवं जोखिम के कामों में हाथ न डालें, कारोबार से लाभ बढ़े, काम बनते रहें, १७ मार्च रात्रि से १ मार्च तक वातावरण ठीक रहेगा।

तुला : १७ मार्च तक लाभ सामान्य, काम-काज बढ़े, सेहत नरम या सुस्ती का प्रभाव रहेगा, यात्रा सफल, संतानपक्ष से चिन्ता, १७ मार्च रात्रि से १९ मार्च तक यात्रा न करें, झगड़ा हो सकता है।

वृश्चिक : १७ मार्च तक यात्रा पर न जायें, वरना पछताना पड़ेगा, अन्य हालात पहले जैसे ही रहेंगे, काम-धन्धा ठीक चलेगा, मित्र सहयोग देंगे, १७ मार्च रात्रि से १९ मार्च तक समय अनुकूल रहेगा।

धनु : १५ मार्च से कारोबारी हालात ठीक चलें, यात्रा आसपास की, बुरे लोगों से बचें, दौड़धूप अधिक, झगड़े से बेचैनी रहेगी, १७ मार्च से १९ मार्च तक व्यापार से लाभ कुछ कम या देर से मिलेगा।

मकर : १७ मार्च तक यात्रा छोड़ दें, सेहत को संभाल रखें, व्यापार से लाभ देर से मिले, हालात प्राय: ठीक चलेंगे, आर्थिक लाभ बढ़ेगा, १७ मार्च रात्रि से १९ मार्च तक घरेलू उलझनें घटती रहेंगी।

कुम्भ : १७ मार्च तक यात्रा सावधानी से करें, बुरे लोगों से बचें, स्त्री को कुछ कष्ट, अन्य हालात ठीक चलेंगे, अफसरों से मेल-जोल, १७ मार्च रात्रि से १९ मार्च तक सेहत बिगड़ सकती है।

मीन : १७ मार्च तक मिश्रितफल मिलेंगे, खर्चीली योजनायें सामने आयेंगी, व्यर्थ के झंझटों से परेशानी, परिश्रम सफल रहेगा, १७ मार्च रात्रि से १९ मार्च तक आय व्यय समान रहेगा।

कुछ कलाकार ऐसे होते है जिनकी रुचि बचपन से ही अभिनय की ओर होती है और वह आगे चलकर भी इसी लाइन में अग्रसर रहते हैं। नीतू सिंह भी ऐसे ही कलाकरों में गिनी जाती हैं।

इनका जन्म ४ जनवरी को दिल्ली में हुआ। इनका वास्तविक नाम हरमीत कौर है। फिल्म 'दो दुनी चार' में इन्होंने प्रथम बार बाल भूमिका निभाई। उसके बाद 'दो कलियां' में भी नीतू सिंह ने बाल भूमिका अदा की और दर्शकों की वाह-वाह लूटी।

बचपन में सफलता प्राप्त करने के बाद ही नीतूसिंह ने यह निश्चय नहीं लिया कि वह बड़ी होकर फिल्म उद्योग की सेवा करेंगी।

जिस फिल्म में नीतूसिंह प्रथम बार नायिका बन कर आई वह थी 'रिक्शावाला।' नवयौवना नीतूसिंह को व्यस्क अभिनेत्री के रूप में दर्शकों ने बेहद पसन्द किया और बहुत से दर्शकों को तो काफी समय बाद पता चला कि यह 'दो कलियां' वाली बेबी है।

नीतू सिंह को सफलता, बतौर हीरोइन प्रथम फिल्म से ही मिली। इसके बाद नीतू सिंह की धड़ाधड़ फिल्में बनीं, प्रदर्शित हुईं और पसन्द की गईं। 'रफू चक्कर', 'खेल खेल में', 'कभी कभी,' 'अमर अकबर अन्थौनी', 'दीवार', 'दूसरा आदमी', 'त्रिशूल', 'कस्में वादे', 'अन्जाने में' के बाद हाल ही में प्रदर्शित 'भला मानुष भी सफल फिल्मों में गिनी जाती हैं।

नीतू सिंह की अल्हड़ जवानी, बेबाकपन और उछल कूद से भरा अभिनय दर्शकों को विशेष कर प्रिय है।

फिल्म उद्योग में एक लम्बे समय से [illegible] चर्चा का विषय बनी हुई हैं। वह चर्चा है इनके विवाह की। ऋषि कपूर से एक लम्बे समय के रोमांस के बाद अब तक यह दोनों विवाह नहीं कर पाये हैं। हालाकि नीतू सिंह ने विवाह के बाद फिल्मों से सन्यास लेने की भी घोषणा की थी। और यह सच है कि उन्होंने नई फिल्में भी साइन नहीं कीं और जो फिल्में उनके पास अब हैं उनके निर्माताओं को भी इन्होंने सूचना दे दी है कि तीन महीने तक अपनी फिल्में बना लें।

अब सवाल यह उठता है कि क्या नीतू सिंह तीन महीने बाद ऋषि से विवाह कर लेगी? या यह केवल पब्लिसिटी स्टंट है। क्योंकि ऋषि कपूर आजकल नीतू सिंह में कम दिलचस्पी लेता है और लीना मुनीम के साथ उसकी आत्मीयता बढ़ती ही जा रही है। तीन महीने बाद क्या होता है यह तो आने वाला समय ही बतायेगा?

शैलजा एपार्टमैंट
पाली हिल, बान्दरा
बम्बई—४०००५०